जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -०६ फरवरी २०२६ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं दिगम्बर जैन श्वेताम्बर हम सब जैन हैं

जैन एकता के परम समर्थक भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए के आव्हानकर्ता

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी आशीर्वाद लेते हुए

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी आशीर्वाद लेते हुए

भारत के केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह जी आशीर्वाद लेते हुए

विज्ञापन

मैं भारत हूं फाउंडेशन के बढ़ते कदम

‘भारत को केवल भारत ही बोला जाए, INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम ‘भारत’ अभियान की सफलता के लिए

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

हमारे द्वारा मेना गया पत्र

१४ अक्टूबर २०२५

श्री थावरचंद गेहलोत
राजभवन, भवन रोड,
बेंगलुरू, कर्नाटक,
भारत - ५६०००१

विषय: हर्ष-हर्ष का विषय 'भारत' सरकार ने GOVERNMENT OF INDIA की जगह **GOVERNMENT OF BHARAT** लिखना शुरू कर दिया है।
संदर्भ: कर्नाटक द्वारा जहां भी INDIA लिखा जाता है वहां पर **BHARAT** लिखने हेतु निवेदन

जय भारत!
बहुत-बहुत हर्ष का विषय है कि 'भारत' सरकार द्वारा जहा GOVERNMENT OF INDIA लिखा जाता था, वहां पर **GOVERNMENT OF BHARAT** लिखना शुरू कर दिया है, जिससे हम भारतीयों का गौरव बढ़ गया है।
निवेदन यह है कि 'भारत' का ही एक राज्य कर्नाटक सरकार में जहां भी INDIA नाम का उपयोग होता है वहां पर **BHARAT** नाम का उपयोग किया जाए, ऐसी हम भारतीयों की विनंती!
जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष — विजय कुमार जैन, मुंबई, मो. 9322307908
राष्ट्रीय महामंत्री — संघप्रिया गौतमी, कोलकाता, मो. 8910628944
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष — डॉ. गोविंद गोयंका, कोटा, मो. 9414182919
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष — विशाल लखानी, कोलकाता, मो. 9830224300
पश्चमी व उत्तर भारत प्रभारी — अनुज जालोटा, मुंबई, मो. 9821069089
राष्ट्रीय सांस्कृतिक निदेशक — तिलिन सेन, मुंबई, मो. 93228 66476
राष्ट्रीय संस्कृतिक मंत्री — कर्ण गुप्ता, कोलकाता, मो. 9874272916
पूर्वांचल उपाध्यक्ष — सुशील पुगलिया, कोलकाता, मो. 8617203713
उपाध्यक्ष — कांता नागरानी, आगरा, मो. 9837988088
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री — रवि सेन, मुंबई, मो. 8108843571
उत्तरांचल उप प्रभारी — पूनम शाकर, आगरा, मो. 9837065440
मंत्रालय संयोजक — अनन्या गुप्ता, इंदौर, इंदौर, मो. 01(019)10-7106
अंतर्राष्ट्रीय संयोजक — विवेक सेन, लंदन, यूके, मो. 044(771)3827945

प्रकल्प प्रमुख

राष्ट्र सेवक — किरण लड्ढा, दिल्ली, मो. 9871605944
प्रसिद्ध व्यंग्यकार — प्रकाश विजयवर्गी, दिल्ली, मो. 7895815961
पूर्व अध्यक्ष NCS, Bharat — अमला विजयवर्गी, कोलकाता, मो. 9831099551
विशेष भारत दूतिनिधि — कमल मोहता, कानपुर, मो. 8989919898
विशेष भारत दूतिनिधि — मिठिल जोशी, जोधपुर, मो. 7023043164
प्रसिद्ध व्यंग्यकार व कवि — अजय राहुल, जयपुर, मो. 9314464412
प्रसिद्ध व्यंग्यकार — मंगेश तिवारी, भुवनेश्वर, मो. 9822336111
सुरेश मुंदड़ा, संभलपुर, मो. 9437061411
नंदकिशोर गांधारी, रोहतक, मो. 9437074044
लक्ष्मण पोद्दार, भुवनेश्वर, मो. 9437068896
सुनील गर्ग, बालासोर, मो. 9437559297
सुनील कोठारी, कटक, मो. 9338104702
रितेश कारवारी, बालासोर, मो. 9937212483

और विश्व में फैले भारतीय...

आह्वान: ‘एक राष्ट्र-एक नाम ‘भारत’

राष्ट्रीय कार्यालय: बी-217, सिंध चौराहा इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28500991, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com, वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆ ५५, सेमाल सेक्स स्ट्रीट, 1 तला, सोनी ओपेरा हाउस के सामने, आशु सेल के पास, बाकाला, कोलकाता, प. बंगाल, भारत- 700007 फोन : 033-71481571
◆ उड़ीसा कार्यालय ◆ सुशील पुगलिया, जीरकाटपुर, जिला-सम्बलपुर, उड़ीसा भारत- 768000 मो. 9437061411
◆ न्यू जर्सी ◆ 48 न्यूपोर्ट पार्क्स, अपार्टमेंट 3115, जर्सी सिटी, न्यू जर्सी- 07310 ईमेल: Nikul.h.jain@gmail.com jain.nilesh96@gmail.com
◆ ह्यूस्टन ◆ 5511 रिवेरी ड्राइव, ह्यूस्टन सौथ, मेरी ह्यूस्टन, TX, यूएसए- 77479 फोन +1-919-410-7106 (USA) ईमेल: mandra.arun@gmail.com
◆ यूनाइटेड किंगडम ◆ 76 रोडोन सेन्ट, नॉर्थेम्प्टन, LE6 2GT, यूके फोन : +44 7703827395 ईमेल: kishorjain@hotmail.co.uk

कर्नाटक के राज्यपाल द्वारा भेजा गया पत्र जरूर पढ़ें..... (मार्गदर्शन करें)

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಸಂಖ್ಯೆ: ಸಿಆಸುಇ 4 ರಾಸ 2026

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರದ ಸಚಿವಾಲಯ,
ಬಹುಮಹಡಿ ಕಟ್ಟಡ,
ಡಾ. ಬಿ.ಆರ್. ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ವೀದಿ,
ಬೆಂಗಳೂರು, ದಿನಾಂಕ:04.02.2026.

ಇವರಿಂದ,
ಸರ್ಕಾರದ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ
ಸಿಬ್ಬಂದಿ ಮತ್ತು ಆಡಳಿತ ಸುಧಾರಣೆ ಇಲಾಖೆ
ವಿಧಾನಸೌಧ, ಬೆಂಗಳೂರು

ಇವರಿಗೆ:-

mainbharathunfoundation@gmail.com

ಮಾನ್ಯರೇ,

ವಿಷಯ : ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರವು ಎಲ್ಲೆಲ್ಲಿ 'Government of India' ಎಂದು ಪದಬಳಕೆ ಮಾಡುತ್ತಿದೆಯೋ ಅಲ್ಲಿ 'Government of Bharat' ಎಂದು ಬಳಸುವ ಕುರಿತು.
ಉಲ್ಲೇಖ : ತಮ್ಮ ಇ-ಮೇಲ್ ದಿನಾಂಕ:14.10.2025

*****

ಮೇಲ್ಕಂಡ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದಂತೆ,ಭಾರತ ಸಂವಿಧಾನದ ಅನುಚ್ಛೇದ 1ರಲ್ಲಿ "(1) India, that is Bharat, shall be a Union of States." ಎಂದು ತಿಳಿಸಲಾಗಿದೆ. ಭಾರತದ ಸಂವಿಧಾನದ 1ನೇ ವಿಧಿಯಲ್ಲಿ ಇಂಡಿಯಾ, ಅರ್ಥಾತ್ ಭಾರತವು, ರಾಜ್ಯಗಳ ಒಂದು ಒಕ್ಕೂಟವಾಗಿರತಕ್ಕದ್ದು ಎಂದು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರವು ಅಧಿಕೃತ ದಾಖಲೆಗಳಲ್ಲಿ, ಎಲ್ಲಿ 'Government of India' ಎಂದು ಬಳಸುತ್ತಿತ್ತೋ ಅಲ್ಲಿ ಮೃಷ್ಟುತ 'Government of Bharat' ಎಂದು ಬಳಸುವ ಕುರಿತು ಯಾವುದೇ ಆದೇಶವನ್ನು ಹೊರಡಿಸಿರುವುದಿಲ್ಲ.

ಸಂವಿಧಾನದ ಅನುಚ್ಛೇದ 1 ರಲ್ಲಿ "India" ಅಂದರೆ "Bharat" ಎಂದು ಈಗಾಗಲೇ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿರುವುದರಿಂದ 'Government of India' ಬದಲಿಗೆ 'Government of Bharat' ಎಂದು ಹೆಸರನ್ನು ಬಳಸಲು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾದ ಆದೇಶದ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಯಾವುದೇ ಸರ್ಕಾರ ಅಥವಾ ವ್ಯಕ್ತಿಯು ತನ್ನ ಇಚ್ಛೆಯಂತೆ 'Government of India' ಅಥವಾ 'Government of Bharat' ಎಂದು ಉಲ್ಲೇಖ ಮಾಡಲು ಹಕ್ಕುಳ್ಳವರಾಗಿರುತ್ತಾರೆ ಎಂದು ತಿಳಿಸಲು ನಿರ್ದೇಶಿತನಾಗಿದ್ದೇನೆ.

ತಮ್ಮ ವಿಶ್ವಾಸಿ,
(ಸಂದೀಪ್ ಬಿ.ಕೆ.)
ಸರ್ಕಾರದ ಅಧೀನ ಕಾರ್ಯದರ್ಶಿ,
ಸಿಬ್ಬಂದಿ ಮತ್ತು ಆಡಳಿತ ಸುಧಾರಣೆ ಇಲಾಖೆ,
(ರಾಜಕೀಯ)

कर्नाटक राज्यपाल कार्यालय से आए कन्नड़ भाषा का हिंदी में अनुवाद (प्रस्तुत)

कर्नाटक सरकार
नंबर: **CSUE 4 Rasa** २०२६
कर्नाटक सरकार सेक्रेटेरिएट, मल्टी स्टोरी बिल्डिंग,
डॉ. बी.आर. अंबेडकर वीडी, ०४.०२.२०२६.
द्वारा,
सरकार के सेक्रेटरी
डिपार्टमेंट ऑफ़ पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स
विधान सौधा, बैंगलोर
सेवा में:-
mainbharathunfoundation@gmail.com
प्रिय,
विषय: जहाँ भी कर्नाटक सरकार ‘भारत सरकार’, शब्दों का इस्तेमाल करती है)
संदर्भ: ई-मेल दिनांक: १४.१०.२०२५ को मिला
ऊपर दिए गए मामले के बारे में, भारत के संविधान के आर्टिकल १ में कहा गया है कि ‘(१) इंडिया, यानी भारत, राज्यों का एक यूनियन होगा।’
नंबर ३. संविधान के आर्टिकल १ में लिखा है कि इंडिया, यानी इंडिया, राज्यों का एक यूनियन होगा।
जहां सेंट्रल गवर्नमेंट ऑफिशियल डॉक्यूमेंट्स में ‘गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया’ शब्द का इस्तेमाल करती थी, वहां अभी ‘गवर्नमेंट ऑफ़ भारत’ शब्द का इस्तेमाल करने का कोई ऑर्डर नहीं है।
कॉन्स्टिट्यूशन के आर्टिकल १ में ‘गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया’ और‘गवर्नमेंट ऑफ़ भारत’ २ को ‘इंडिया’ यानी ‘भारत’ के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए अलग से ऑर्डर की ज़रूरत नहीं है, मुझे यह बताने का निर्देश दिया गया है कि कोई भी गवर्नमेंट या व्यक्ति अपनी मर्ज़ी से इसे ‘गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया’ या ‘गवर्नमेंट ऑफ़ भारत’ कहने का हकदार होगा।
(संदीप बी.के.)
अंडर सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट, डिपार्टमेंट ऑफ़ पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स,
(पॉलिटिक्स)

हिंदी अनुवाद गूगल विधा का सहयोग लेकर प्रस्तुति

‘जिनागम’ के सभी प्रबुद्ध पाठकों से विनंती, कृपया मार्गदर्शन करावें -राष्ट्रीय अध्यक्ष, मैं भारत हूं फाउंडेशन

(कृपया पृष्ठ (३९) अंतिम पन्ने के अंदर का पृष्ठ पीछे भी देखें....)

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक ०६, फरवरी २०२६

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ० **सम्पादकीय** ० दिगम्बर श्वेताम्बर

तीर्थ के निर्माण के साथ युवाओं को समाज से जोड़ना है बहुत जरूरी

समय का चक्कर अपनी धूरी पर चलता ही रहता है, देखते ही देखते आचार्य श्री विद्यासागर जी को हम सबके बीच से गए २ साल हो जाएंगे, हम सब १८ फरवरी को आचार्य श्री की द्वितीय पुण्यतिथि भी मनाएंगे, ऐसा लगता है कि मुझे कल ही तो आचार्य श्री ने मुझसे कहा था कि 'जैन एकता' के साथ भारत व गौमाता के लिए भी कार्य करो और आज उनके आदेश को आंशिक सफलता भी मिलती जा रही है।

कर्नाटक राज्य के राज्यपाल थावरचंद जी गहलोत के कार्यालय से पत्र आया कि केंद्र सरकार के आदेश से ही हम कर्नाटक राज्य विधानसभा में अपने राष्ट्र का नाम केवल 'भारत' का उल्लेख कर सकते हैं, हम पत्राचार कर रहे हैं, जिनकी प्रति हमने 'जिनागम' के प्रस्तुत अंक के पन्ने २ व ३९ पर प्रकाशित भी की है।

'गौमाता' को 'भारत' का एक राज्य महाराष्ट्र में प्रथमत: 'राज्यमाता' का सम्मान सरकार द्वारा प्राप्त हो गया है। भारत के अन्य १२ राज्यों ने 'राज्यमाता' का सम्मान प्राप्त हो जाए तो हम सबकी 'गौमाता' को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान प्राप्त हो जाएगा, प्रयास गतिमान है।

मैं 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों को एक बार फिर से याद दिलाना चाहता हूं कि 'तीर्थ' का निर्माण जरूर हो, क्योंकि 'तीर्थ व मंदिर' हमारे वंदनीय गुरु भगवंत का निवास यानी की पूजा पाठ करने का स्थल होता है, पर उसकी साज संभाल भी तो जरूरी है, हम देख भी रहे हैं कि कई-कई तीर्थ हमारे जिर्ण-शिर्ण अवस्था में है, जिसका भी साज संभाल जरूरी है, इसके लिए हमें युवा पीढ़ी को प्रेरित करना होगा, क्योंकि जैन धर्म का भविष्य युवाओं के हाथों में है, हमें युवाओं को स्वयं के भविष्य की सोच व संभाल के साथ जैन धर्म व हमारे पूजनीय स्थलों की सुरक्षा के बारे में बताने के साथ, जिम्मेदारी भी देनी जरूरी है, ताकि हमारे द्वारा बनाए गए तीर्थ, हमारे लिए ही सुरक्षित रह सके, कहीं कोई अनियमितता ना घटे।

जैन समाज की संख्या पर भी हमें ध्यान देना जरूरी है, ज्ञात रहे कि मुगल काल में ४ करोड़ हम 'जैन' थे और भारत राष्ट्र की संख्या १५ करोड़ के करीब थी, आज राष्ट्र की संख्या १४० करोड़ है और हम जैनों की संख्या घट कर ५० लाख के करीब रह गई है, है ना चौंकाने वाली बात..!

जैन समाज के साथ सभी राजस्थानी समाज के लिए अति प्रिय का विषय है कि वर्ष २०२६ को 'राजस्थान स्थापना दिवस' ३० मार्च को इस वर्ष मुंबई की जगह महाराष्ट्र की सांस्कृतिक नगरी 'पुणे' में मनाने का निर्णय लिया गया है, इसकी आगामी जानकारी जैन समाज की सोच व संवर्धनता को ध्यान में रखने वाली एकमात्र पत्रिका 'जिनागम' के अगले विशेषांकों में पढ़ने को मिलेगी।

जय जिनेंद्र! जय गौमाता! जय भारत!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

ग्राम गुराडिया पित्रामल में समता भवन का हुआ लोकार्पण

नागदा जं: धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति एवं श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर के द्वारा नानेश नगर, ग्राम गुराडिया पित्रामल में समता भवन का लोकार्पण अतिथियो की गरिमामय उपस्थिति के बीच भव्य रूप से किया गया। आयोजन में नरेन्द्रजी गांधी (गोरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष), सुरेश बच्छावत (गोरवशाली राष्ट्रीय महामंत्री), चन्द्रशेखर खिन्दावत (गोरवशाली राष्ट्रीय संयोजक), गौतम रांका (गोरवशाली पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष), विनोद जैन (म.प्र. इकाई), विजय टंच (म.प्र. इकाई उपाध्यक्ष), मनोहरलाल खिन्दावत (पूर्व धर्मपाल प्रवृत्ति) अतिथि के रूप में मौजूद थे, साथ ही आंचलिक व स्थानीय संघ के पदाधिकारी भी लोकार्पण समारोह में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संयोजक चन्द्रशेखर खिन्दावत धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति की धर्मपाल पाठशाला की व्यापक जानकारी देते हुए 'जिनागम' को बताया कि वर्तमान में १२१ पाठशालाएं चल रही है तथा ९६ पाठशालाएं निःशुल्क चल रही है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष गांधी ने श्री बताया कि गुराडिया पित्रामल गांव में नानेशमय धर्मपालों का कुम्भ लग गया एवं यहां की मिट्टी बहुत ही पवित्र है, पूर्व में हमारे आचार्य भगवन १००८ श्री नानालालजी म.सा. का पदार्पण हुआ जिससे लाखों की संख्या में धर्मपाल बने, जो आज आपका महाकुम्भ देखकर राष्ट्रीय संघ आपके साथ खड़ा है और आप धर्मपाल पाठशाला १२१ से बढ़ाकर १५१, २०० तक धर्मपाल पाठशाला संख्या बढ़ा सकते हैं। धर्मपाल बेटियों के लिये उन्होंने बताया कि हम संघ में विचार विमर्श करके आपके हित में प्रयास करेंगे और श्रीसंघ के माध्यम से आपका सहयोग किया जायेगा, इस मौके पर प्रतिभावान बच्चों को पुरस्कार भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन दिलीप कांठेड एवं गुरूभक्त महेश नाहटा ने किया एवं आभार जयेश राठौर ने माना।

-निर्मल जैन
९९०७०३०३८१

मुर्शिदाबाद जिला कमेटी अब युवाओं के हाथ में.....

मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल:- बड़े हर्ष के साथ सुचित किया जाता है कि मुर्शिदाबाद जिला दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष पद में अरुण कुमार जैन सेठी अरगांबाद, महामन्त्री मनोज कुमार जैन बड़जात्या धुलियान व कोषाध्यक्ष अनुज काला बरहमपुर को ता:१०.०२.२०२६ को बहरमपुर की सभा में सर्वसम्मति से नियुक्त किया गया है। इन कर्मठ युवाओं को बहुत बहुत बधाई.....

ज्ञात हो मुर्शिदाबाद जिला दिगम्बर जैन समाज मे आचार्य प्रसन्न सागर महाराज की प्रेरणा से सन २००२ से एकसुत्र से जुड़े हुए हैं तथा जिला में रात्रि विवाह एवं मृतक भोज व भेंट सम्पूर्ण रूप से वर्जित है। मुर्शिदाबाद जिला समाज द्वारा श्री सम्मेद शिखर के तेरापंथी कोठी में त्यागी व्रती के लिये निशुल्क चौका स्थायी रूप से चल रहा है, जिलाकी एकता व अखंडता पूरे विश्व में एक सम्मानित है...

-संजय कुमार जैन बड़जात्या, धुलियान

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भाजपा महाराष्ट्र के पार्षदों का सम्मान समारोह संपन्न

मुंबईः प. पू. आचार्य श्री नयपद्मसागर महाराज जी एवं साध्वी श्री मयनाश्री जी के पावन सानिध्य में जैन इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक महासंघ एवं भाजपा जैन प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय जनता पार्टी से नवनिर्वाचित ३३ जैन पार्षदों का भव्य सम्मान समारोह मुंबई में अत्यंत उत्साहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ, इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र राज्य के कौशल्य विकास मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, जैन अल्पसंख्यक आर्थिक विकास महामंडल के अध्यक्ष एवं राज्य मंत्री ललित गांधी, विधायक नरेंद्र मेहता, विधायक चैनसुख संचेती, मीरा-भायंदर की महापौर डिंपल मेहता, श्रीमती शायना एन.सी., श्रीमती मंजू लोढ़ा तथा भाजपा मीरा-भायंदर जिला अध्यक्ष दिलीप जैन प्रमुख रूप से उपस्थित थे, सभी मान्यवरों ने नवनिर्वाचित जैन पार्षदों एवं भाजपा कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन करते हुए संबोधित किया, अपने आशीर्वचनों में आचार्य श्री नयपद्मसागर महाराज जी ने कहा कि धर्म के मूल्यों के साथ-साथ राजनीति में जैन युवाओं की सक्रिय सहभागिता आज के समय की आवश्यकता है, ताकि समाज राष्ट्रनिर्माण में और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सके। साध्वी श्री मयनाश्री जी ने राजनीति में नारी शक्ति की बढ़ती सहभागिता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए जैन समाज से अधिक संख्या में महिलाओं के पार्षद के रूप में निर्वाचित होने की समाज के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया। मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने नवनिर्वाचित जैन पार्षदों को जनसेवा के स्पष्ट मानदंड बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विचार, विकास की नीति और राष्ट्रहित का संकल्प जन-जन तक पहुँचाना प्रत्येक जनप्रतिनिधि का कर्तव्य है। राज्य मंत्री ललित गांधी ने जैन अल्पसंख्यक आर्थिक विकास महामंडल की विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुए आग्रह किया कि इन योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने हेतु जनप्रतिनिधि सक्रिय और संवेदनशील भूमिका निभाएँ। विधायक नरेंद्र मेहता एवं विधायक चैनसुख संचेती ने युवाओं को संगठनात्मक अनुशासन, समर्पण और सकारात्मक कार्यशैली के साथ पार्टी एवं समाज के लिए कार्य करने का मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम के अंत में भाजपा जैन प्रकोष्ठ, महाराष्ट्र प्रदेश के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के आयोजक संदीप भंडारी ने कहा कि पिछले चार वर्षों में भाजपा जैन प्रकोष्ठ ने जैन युवाओं को संगठित कर राजनीतिक जागरूकता एवं चेतना निर्माण का निरंतर कार्य किया है, उसी का प्रतिफल आज भाजपा से ३३ जैन पार्षदों का निर्वाचन हुआ है, आने वाले समय में जैन युवा राष्ट्र और राजनीति में और भी सशक्त भूमिका निभाएंगे, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। इस भव्य कार्यक्रम का यशस्वी नियोजन वीरेंद्र शाह, घेवरचंद बोहरा, नितिन वोरा, विकास अच्छा एवं जश वीरा द्वारा किया गया।

समारोह का सूत्र संचालन संदीप भंडारी ने और आभार प्रदर्शन भाजपा जैन प्रकोष्ठ के महामंत्री विकास अच्छा ने किया।

- संदीप भंडारी, पुणे

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'आपणों राजस्थान' पुणे में

पुणे: भारत का ही एक राज्य महाराष्ट्र की सांस्कृतिक नगरी 'पुणे' में 'राजस्थान स्थापना दिवस' व 'महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव' ३० मार्च २०२६ को पुणे के 'गणेश कला क्रिड़ा मंच' के सभागार में 'भारतीय संस्कृति का समागम' के साथ निश्चित किया गया है, जिसमें राजस्थानी संस्कृति, नृत्य, गीत, इतिहास के साथ B₂B युवाओं के लिए भी शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

बतादें कि पुणे के मॉडर्न कॉलेज के प्रांगण में ३१ जनवरी २०२६ को हुई सभा में बिजय कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' प्रसिद्ध गीतकार व संगीतकार रवि जैन मुंबई राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री, सुरेश पुनमिया मुंबई 'जिसो' संस्थापक अध्यक्ष, रामानुज भट्टड़ मुंबई प्रचार प्रसार मंत्री 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' के साथ पुणे निवासी सर्वश्री सतीश बजाज, रौनक झवर, एडवोकेट महेश अग्रवाल, संजीव अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, उमेश अग्रवाल, मनीष एम.मेहता, नरेश रुपाणी, श्रीमती रूपल चौरडिया संपादक जैन परम्परा के साथ कार्यक्रम संयोजक रमेश ओसवाल वरिष्ठ समाजसेवी व 'जैन एकता' के प्रवर्तक, श्रीमती सीमा बंग, श्रीमती सुनंदा धूत, श्रीमती कविता मालपानी, सुरेश धर्मावत राजस्थान प्रकोष्ठ महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा आदि की उपस्थिति में निर्णय लिया गया कि ३० मार्च २०२६ को 'राजस्थान स्थापना दिवस' पर हम सभी राजस्थानी वैश्य समाज मिलकर भव्यतीभव्य कार्यक्रम का आयोजन करेंगे, साथ ही B₂B का कार्यक्रम भी होगा, जिसमें हम युवाओं को मार्गदर्शन देंगे कि आप सभी नौकरी देने वाले बनें, जबकि आज युवा नौकरी करने के मार्ग पर चल पड़े हैं, सभी उपस्थित महानुभावों ने मिलकर पुरजोर संभावना व्यक्त की, कि लगातार ८ वर्ष तक मुंबई में आयोजित 'आपणों राजस्थान' इस वर्ष ३० मार्च को पुणे में किया जाए, ताकि राजस्थानी समाज की 'युवा शक्ति' राजस्थानी संस्कृति से ओत-प्रोत रहे। जय जय राजस्थानी! जय महाराष्ट्र! जय भारत! जय गौमाता!

-रवि जैन, मुंबई
राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
मैं भारत हूं फाउंडेशन

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्यश्री विद्यासागरजी का जीवन परिचय

पूर्व नाम	: श्री विद्याधरजी
पिताश्री	: श्री मल्लप्पाजी अष्टगे (मुनिश्री मल्लिसागरजी)
माताश्री	: श्रीमती श्रीमंतीजी (आर्यिकाश्री समयमतिजी)
भाई/बहन	: चार भाई, दो बहन
जन्म स्थान	: चिक्कोड़ी (ग्राम- सदलगा के पास), बेलगांव (कर्नाटक)
जन्मतिथि	: आश्विन शुक्ल पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) वि.सं. २००३, १०-१०-१९४६, गुरुवार, रात्रि में १२.३० बजे।
जन्म नक्षत्र	: उत्तरा भाद्रपद।
मातृभाषा	: कन्नड़।
शिक्षा	: ९वीं मैट्रिक (कन्नड़ भाषा में)
ब्रह्मचर्य व्रत	: श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चूलगिरि (खानियाजी), जयपुर (राजस्थान)
प्रतिमा	: सात (आचार्यश्री देशभूषणजी महाराज से)
स्थल	: १९६६ में श्रवणबेलगोला, हासन (कर्नाटक)
मुनि दीक्षा स्थल	: अजमेर (राजस्थान)
मुनि दीक्षा तिथि	: आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. २०२५, ३०-०६-१९६८, रविवार
आचार्य पद तिथि	: मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया- वि.सं. २०२९, दिनांक २२-११-१९७२, बुधवार
आचार्य पद स्थल	: नसीराबाद (राजस्थान) में, आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने अपना आचार्य पद प्रदान किया।

इंडिया नहीं भारत बोलें

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मेरे आदर्श, चलते फिरते तीर्थंकर मुझे अकेला छोड़ गए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन

संकलित चित्र

संकलित चित्र
विश्व में भारत को सम्मान दिला रहे हैं आप नरेंद्र मोदी जी

चंद्रगिरी-डोंगरगढ़: दिगम्बर समुदाय के जैनाचार्य १०८ श्री विद्यासागर महाराज के समाधि लेने पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ भारत के कई राजनितिज्ञों, वरिष्ठ समाज सेवियों के साथ महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस ने भी विगत २ साल पहले शोक जताया था, सभी ने अपने संदेश में कहा कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज जी का जीवन ज्ञान प्राप्ति, कठोर तपस्या और आत्म-कल्याण के लिए समर्पित था। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान विद्यासागर जी महाराज ने जीवन भर उपदेशों, लेखों और कविताओं के माध्यम से जनता को प्रबुद्ध किया और उन्हें आत्म-सुधार का मार्ग दिखाया, एक महान राष्ट्रीय संत और समाज सुधारक का गोलोक जब हुआ तो, उनके विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित हुए।

चलते-फिरते तीर्थंकर...

५६ सालों में १.२५ लाख किमी से अधिक चले थे आचार्यश्री

आचार्यश्री विद्यासागर जी ने १९६८ में दीक्षा ली, इसके बाद १.२५ लाख किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल चले, ऐसे में देखा जाए तो आचार्य श्री हर रोज औसतन ६.११ किलोमीटर पैदल चले, इस जानकारी की पुष्टि अचित सागर महाराजजी ने की थी मेडिसिन स्पेशलिस्ट डॉ. योगेंद्र श्रीवास्तव के अनुसार आचार्य श्री नियमों का पालन करने वाले थे, उनका खानपान बेहद सीमित था, वे तेल, चीनी और नमक तक का सेवन नहीं करते थे, ऐसे में भी उनका स्वास्थ्य अच्छा था, जैसे आचार-विचार और नियम संयम होता है, वैसा ही शरीर भी ढल जाता रहै, वैसे भी रोज पैदल चलने से आपकी क्षमता में बढ़ोतरी होती रही, जैसे कोई व्यक्ति पहले एक दिन में पांच किलोमीटर ही पैदल चलकर थक जाता है, लेकिन वह रोज पांच किलोमीटर पैदल चले तो धीरे-धीरे उसकी पैदल चलने की क्षमता बढ़ती जाती है, चूंकि आचार्यश्री सालों से पैदल विहार करते रहे, निश्चित ही इससे उनके पैदल चलने की क्षमता **शेष पृष्ठ १६ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से... में बढ़ोतरी होती रही।

आचार्यश्री के मुंह से निकला ॐ
सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में लीन हो गए

१७ फरवरी रात २:३५ बजे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र में महासमाधि में प्रवेश करने से पहले सिर्फ 'ॐ' शब्द कहा, सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में ॐ शब्द के साथ लीन हो गए। महासमाधि के पहले आचार्यश्री को भी इस बात का अहसास हो गया था कि इस भूमंडल में उनका समय पूरा हो गया, एक दिन सबको यहां से रवाना होना ही है, इसलिए वे हमेशा जैन श्रावकों को कहते थे, भगवान का नाम लेते रहो। मृत्यु को मोक्ष उत्सव के रूप में मनाना चाहिए उन्होंने आखिरी समय में कहा कि उनके गुरु इंतजार कर रहे हैं, उनके पास जाने का समय आ गया है।

चातुर्मास सात राज्यों में किए, सबसे ज्यादा मप्र. में...

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने सात राज्यों में चातुर्मास किए, लेकिन इस दौरान सबसे ज्यादा चातुर्मास मध्यप्रदेश में किए, उन्होंने राजस्थान में ७ चातुर्मास किए, उत्तरप्रदेश में १, मध्यप्रदेश में ३७, बिहार (वर्तमान में झारखंड) में १, महाराष्ट्र में ६, गुजरात में १ और छत्तीसगढ़ में ३ चातुर्मास किए, जहां भी वे चातुर्मास करते, वहां अनुयायियों का मेला लग जाता, सबको संयम, तप और त्याग की

शिक्षा आचार्यश्री देते थे।

कविता का शौक, कुछ साल से जापानी कविता भी लिखी

आचार्यश्री कुछ सालों से जापानी हायकू (कविता) लिख रहे थे। हायकू जापानी छंद की कविता होती है, जिसमें पहली पंक्ति में ५ अक्षर, दूसरी में ७ और तीसरी में ५ अक्षर होते हैं, संक्षेप में सारगर्भित बहु अर्थ को प्रकट करने वाली होती है। आचार्यश्री ने ६०० से ज्यादा हायकू लिखे, आचार्यश्री की ज्योतिष, दर्शन और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी काफी रुचि थी। आचार्य श्री के जीवन की एकमात्र इच्छा रही कि भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बने, साथ ही भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, गौमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान मिले, आचार्य श्री की इच्छापूर्ति को पूर्ण करने का प्रण आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन ने संकल्प के साथ पूरा करने का प्रयास कर रहें है।

-जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म.सा.

निवासी	: देशनोक
पिता का नाम	: श्री नेमचन्दजी
माता का नाम	: श्रीमती गवराबाई
गोत्र	: भूरा
जन्म तिथि	: चैत्र सुदी 14, वि.सं. 2009
दीक्षा तिथि	: माघ सुदी 12, वि.सं. 2031
दीक्षा स्थल	: देशनोक
दीक्षा गुरु	: आचार्य श्री नानेश
दीक्षा के समय उम्र	: 22 वर्ष 9 माह 8 दिन
युवाचार्य पद तिथि	: फाल्गुन सुदी 3, वि.सं. 2048
युवाचार्य पद प्रदान स्थल	: बीकानेर
युवाचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 17 वर्ष 21 दिन
युवाचार्य पद के समय उम्र	: 39 वर्ष 10 माह 10 दिन
युवाचार्य काल में दीक्षा (संतों की)	: 9
आचार्य पद तिथि	: कार्तिक बदी 3, वि.सं. 2056
आचार्य पद स्थल	: उदयपुर
आचार्य पद के समय उम्र	: 47 वर्ष 6 माह 4 दिन
आचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 24 वर्ष 6 माह 6 दिन
शासनकाल में दीक्षा (संत-सती की)	: 254

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैनत्व की राह पर सभक्त साधु मार्गी सम्प्रदाय

राम चमक रहे भानु समाना

साधुमार्गी पावन परम्परा के महान् आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. का जन्म पौष शुक्ला ९ वि.सं. १८६० को टोडारायसिंह नगर में श्री रतनचन्दजी श्रीमती मोतीदेवी चपलोत के यहाँ हुआ। अल्पवय में ही पूज्यश्री अद्‌भुत प्रतिभा के धनी, आपको संसार में अभिरुचि नहीं थी। संसार को असार जानकर संयम ग्रहण करने का दृढ़ संकल्प जागृत हो उठा। मिंगसर सुदी २ वि.सं. १८७९ को 'बूंदी' में आपने पूज्य श्री लालचंदजी म.सा. से दीक्षा ग्रहण की। मुनि अवस्था में आपने आगमों का जलस्पर्शी अध्ययन किया। आपने साधुओं में शिथिलता को देख अपने गुरु से संयम की शुद्ध पालना की भावना दर्शाई, तदनन्तर गुरु आज्ञा पाकर और पृथक विचरण करते हुए २१ साल तक बेले-तेले की उग्र तपस्या की। १२ महीने केवल एक ही चादर धारण करना, जीवनपर्यन्त मिठाई व तली वस्तु का त्याग तथा १२ द्रव्यों से अधिक नहीं खाने का प्रण, प्रतिदिन २००० नमोत्थुणं द्वारा देवस्तुति, ऐसी कठोरतम प्रतिज्ञों धारण की, जहाँ-जहाँ भी आप पधारे, आपके शुद्ध संयम एवं अनुशासन को देखकर जनता नतमस्तक होने लगी। माघ सुदी ५ वि.सं. १९०७ को बीकानेर में चतुर्विध संघ से आपने आचार्य पद स्वीकार किया। पूज्यश्री की कतई भावना नहीं थी कि वे आचार्य बनें, आपके तेज से प्रभावित होकर नाथद्वारा प्रवचन सभा में सोने के सिक्कों की बारिश हुई,ये सिक्के आज भी नाथद्वारा के लोगों के पास देखे जा सकते हैं। रामपुरा में मुमुक्षु राजीबाई की बेड़ियाँ पूज्यश्री के सहज दृष्टि पड़ते ही बन्धन से मुक्त हो गई, ऐसी कई घटनों आपके शुद्ध संयमी परिवेश के कारण घटित हुई। पूज्यश्री अपने अन्तकरण में रमण करते हुए वैशाख शुक्ला ५ संवत् १९१७ को जावद में संलेखना संथारा के साथ महाप्रयाण को प्राप्त हुए।

आचार्य शिवलालजी म.सा.

आपका जन्म मालव भूमि में नीमच के पास 'धामनिया' नामक एक छोटे-से ग्रामीण अंचल में संवत् १८६७ पौष सुदी १० को मातुश्री कुन्दनदेवी की रत्नधारिणी कुक्षी से हुआ, आपके पिताश्री टीकमचंदजी बोड़ावत से बचपन में ही आपको सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। श्रमणत्व की साधना के लिए आपने वि. सं. १८९१ को बूंदी में पूज्य श्री दयालचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की। पूर्ण सजगता एवं विनीत भाव से अध्ययन के कारण अल्प समय में ही आपकी प्रतिभा निखर उठी। संवत् १९०७ की माघ सुदी ५ को बीकानेर पाँच दीक्षाओं के ऐतिहासिक अवसर पर संघ के उत्तरदायित्व के रुप में आपको युवाचार्य पद प्रदान किया गया। पूज्यश्री ने अपने दीर्घ अनुभवों के साथ ७२ कमलों की समाचारी का निर्धारण किया,जिसका आज भी पालन किया जा रहा है। आपने ३३ वर्ष तक एकान्तर तप की साधना की और अन्त में संलेखना संथारा सहित संवत् १९३३ की पौष शुक्ला ६ को 'जावद' में मोक्षगामी हुए।

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.

मारवाड़ की मरुधरा जोधपुर में श्रेष्ठीवर्य नथमलजी खिंवेसरा की धर्मपत्नी जीवीबाई की कुक्षि से संवत् १८७६ को शुभ नक्षत्र में आपका जन्म हुआ। आपका विवाह तय करने के साथ ही जैसे ही आपकी बारात वधु पक्ष के तौरण पर पहुँची, आपकी पाग नीचे गिर गई, बस पाग गिरते ही आपको वैराग्य उत्पन्न हो गया और आप पुन: घर की ओर लौट गये। चैत्र सुदी ११ वि.सं. १८९८ को आपने श्री हरषचंदजी **शेष पृष्ठ २० पर...**

पृष्ठ १८ से... म.सा. के पास बूंदी में भागवती दीक्षा ग्रहण की। आपकी विनयशीलता एवं ज्ञानपीपासा अत्यन्त तीव्र थी। रामपुरा में एक सुश्रावक पंडितरत्न श्री केदारजी गंगा ने आपके धैर्य की परीक्षा ली, जिसमें आप शत-प्रतिशत सफल रहे। आपकी अद्‌भुत प्रतिभा को देखकर आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. ने पौष शुक्ला सप्तमी वि.सं. १९२५ को युवाचार्य पद प्रदान किया। आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. के महाप्रयाण के पश्चात वि.सं. १९३३ की पौष शुक्ला ६ को साधु संघ का उत्तरदायित्व आपश्री के सक्षम कंधों पर आ गया। आप छोटे-बड़े अनुशासन प्रिय साधकों के प्रति अटूट स्नेह भाव बरसाते और जो भी अनुशासन भंग करते उनको कठोर दंड देने में पीछे नहीं रहते थे। वि.सं. १९२८ को पाली में एक जैनाचार्य श्री किशनसागरजी म.सा. ने आपको शास्त्रार्थ हेतु चुनौती दी, जिसमें आप विजयी हुए। आपने तत्कालीन पंजाब, कराची, रावलपिंडी तक की सुदूर यात्रों की। आपको वचन सम्पदा की सिद्धि प्राप्त थी। आपने अपने शासनकाल में जिनशासन की अद्‌भूत प्रभावना की एवं वि.सं. १९५४ माघ सुदी १० को 'रतलाम' में संथारा संलेखना सहित देवलोक हुए।

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

निर्ग्रन्थ शिरोमणि आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. का जन्म मरुधरा के पाली में सुप्रसिद्ध धोका परिवार में श्रेष्ठीवर्य श्री पाखरदाजी की धर्मपत्नी हीराबाई कुक्षी से वि.सं. १८८५ वैशाख शुक्ला ४ को हुआ। माता-पिता के आकस्मिक वियोग से आपकी अन्तर्आत्मा संसार से विरक्त हो उठी। वि. सं. १९०९ की चैत्र शुक्ला १२ को श्री हरकचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से ब्यावर में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। अल्पकाल में ही आपकी गिनती जैन जगत के मूर्धन्य विद्वानों में होने लगी, आपके ज्ञान दर्शन चारित्र की छाप सम्पूर्ण संघ पर पड़ी, इसी कारण तत्कालीन शासन व्यवस्था को देखते हुए आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. ने वि.सं. १९५४ आसोज शुक्ला पूर्णिमा को आपको युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। युवाचार्य काल में आपने सुदृढ़ संगठन हेतु नीति निर्धारण का कार्य किया। वि.सं. १९५४ की माघ शुक्ला १० को आप आचार्य पद पर आरुढ़ हुए। आपने १५० के आस-पास संतों के संगठन हेतु ९४ कलमों की समाचारी निर्धारित की। आपने जिनशासन को दैदीप्यमान करने हेतु कई उल्लेखनीय कार्य किये। आपका महाप्रयाण वि.सं. १९५७ कार्तिक शुक्ला १० को 'रतलाम' में संलेखना संथारा सहित हुआ।

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.

आपका जन्म ढुंढार प्रांत के टोंक शहर में श्रेष्ठीवर्य श्री चुन्नीलालजी बम्ब की धर्मपरायण सद्‌गुणों से सुसज्जित धर्मपत्नी श्रीमती चाँदकंवर बाई की कुक्षी से विक्रम संवत् १९२६ की आषाढ़ शुक्ला १२ को हुआ। आपके गर्भ में आते ही परिवार में अन्न-धन्न व्यापार में विपुल वृद्धि हुई, इसीलिए आपका नाम श्रीलाल रखा गया। आपने ६ वर्ष की अल्पआयु में प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि कंठस्थ कर लिये। मुनिगणों का सान्निध्य पाकर संसार की असारता का बोध हुआ, जिससे संसार के कार्य से उदासीन रहने लगे, आपकी यह स्थिति देखते हुए पारिवारिकजनों ने आपकी शादी मानकंवरबाई से करवा दी। शादी के बाद भी आपका मन सांसरिक कार्यों में नहीं लगा एवं आपने ब्रह्मचर्य की दुसाध्य कठोरतम गति ग्रहण कर ली एवं 'रतलाम' में आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. की सेवा में पहुँचे। घरवालों द्वारा आपश्री पर अनेक कठोर प्रतिबन्ध लगाने के बावजदू भी आपके वैराग्य भाव में कोई अन्तर नहीं आया, बल्कि विशेष दृढ़ता आ गई। परिवार वालों का प्रयत्न रहा कि आप संसार के बन्धन में बंधें, लेकिन आपश्री का आन्तरिक वैराग्य होने से सभी का प्रयास निष्फल रहा, तदन्तर आप हवेली के ऊपरी भाग से कूद गये। धन्य पूज्यश्री जी को, जिन्होंने स्वयं प्रतिज्ञा लेकर अपने प्राणों की परवाह नहीं की। आपकी वैराग्य भावना को देखकर पारिवारिकजनों ने आपकी विधिवत् दीक्षा विक्रम संवत् १९४५ माघ कृष्णा ७ को बणोठा में श्री किशनलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न करवाई। विक्रम संवत् कार्तिक सुदी १० को 'रतलाम' में आप आचार्य पद पर आरुढ़ हए, उस समय आपकी उम्र ३१ साल थी। अत्याधिक सान्निध्य में बड़े-बड़े रियासतों के राजा-महाराजा, हाकिम-दीवान, ठाकुर आदि आते एवं आपके उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित होते, आपसे जीवदया तप-साधना आदि का उपदेश सुन हर्षित होते। फलस्वरुप कई स्थानों पर पशु बली बंद हुई एवं जीवरक्षा के कार्य भी हुए। आपके जीवन से देशी जन ही नहीं विदेशी जन भी प्रभावित होते रहे। हिन्दु-मुस्लिम सिख-ईसाई सभी सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने आपकी अमृतमयी वाणी से प्रेरणा ग्रहण की, आपने अपने उपदेश से २५०० बकरों, २० पाड़ों और एक सिंह को एक साथ अभयदान दिलाया, आपके प्रवचनों में शिक्षा का महत्व भी हमेशा प्रतिपादित होता रहा, जिससे अनेक स्थानों पर शिक्षा के केन्द्र स्थापित हुए। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ सुदी ३ को 'जैतारण' से आपको मोक्ष प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

थांदला मालवा में आपका जन्म श्रीमती नाथीबाई एवं पिताश्री जीवराजजी कवाड़े के यहाँ विक्रम संवत् १९३२ की कार्तिक सुदी ४ को हुआ। नवजात बालक का भव्य ललाट, सुनहरा रंग, **शेष पृष्ठ २१ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २० से... सुन्दर देह दृष्टि को देखकर आपका नाम 'जवाहर' रखा गया। अल्पवय में ही आपके माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से आपका मन संसार से विरक्त हो गया। फलस्वरूप विक्रम संवत् १९४८ की मिंगसर सुदी २ को 'लिंबड़ी' में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आपके दीक्षा प्रदाता श्री घासीलालजी म.सा. थे। आपके गुरु भ्राता श्री मगनलालजी म.सा. थे। आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन करने के साथ ही 'थोकड़े' आदि का अच्छा अभ्यास किया, आपने उस समय व्याप्त दया दान विरोधी धारणों का पूर्ण रूप से खण्डन किया। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ शुक्ला ३ को 'भीनासर' में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। आपके शासन में जिनशासन की अद्भुत तथा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये खूब प्रयास किये तथा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये खूब प्रयास किये तथा जनमानस को गुमराह कर रही अल्पारंभ महारंभ, मिल के वस्त्र, चर्बी, दयादान आदि की सटीक व्याख्या देकर जनमानस की भ्रान्ति को दूर किया। आपने धर्म की रक्षा के साथ राष्ट्र की रक्षा का संदेश दिया, जिससे प्रभावित होकर बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेता सर्वश्री मदनमोहन मालवीय, बालगंगाधर तिलक, बिट्ठल भाई पटेल, सरदार वल्लभभाई पटेल ने आपके सानिध्य का लाभ उठाया। आप सुसंगठन के पूर्ण हिमायती रहे। आपके प्रवचनों की श्रृंखला 'जवाहर किरणावली' विद्वत जगत् में सर्वोपरी स्थान रखती है तथा आदर की दृष्टि से पढी जाती है। विक्रम संवत् २००० आषाढ शुक्ला ८ को संलखेना संथारा कर 'भीनासर' में आपका महाप्रयाण हुआ।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.

वीर वसुंधरा मेद पाठ की राजधानी 'उदयपुर' के ही विशिष्ट राज्य कर्मचारी श्रीमान साहबलालजी मारू की धर्मपत्नी इंद्राबाई की कुक्षि से विक्रम संवत् १९४७ की श्रावण सुदी तृतीया को एक बालक ने जन्म लिया, जिसके माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्यों ने शरीर सम्पदा को देखकर 'गणेश' नाम रखा। १२-१३ वर्ष की अल्पायु में हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। माता-पिता, बहन एवं पत्नी के प्लेग की चपेट में आ जाने से उनका स्वर्गवास हुआ, जिससे आपका मन संसार के माया-जाल से विचलित हो उठा। आपने मिंगसर कृष्णा १ विक्रम संवत् १९६२ को उदयपुर में भागवती दीक्षा पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के श्रीमुख से ग्रहण कर अपनी अद्भुत का प्रतिभा परिचय दिया। आपने गुरू द्वारा ली गई परीक्षा में व्याकरण में १०० में से ८२ अंक साहित्य में ९४ अंक एवं मौखिक में १०० में से १०० अंक प्राप्त कर अपनी निर्मल प्रज्ञा का उदाहरण प्रस्तुत किया। आपके नाम का संधिविच्छेद करने पर 'गण-ईश' यानी गणेश रूप में सार्थक हुआ। आप अनेक गुणों के स्वामी बने। आपने भी जीवदया का बेजोड़ प्रचार-प्रसार किया। आपको युवाचार्य पद फाल्गुन सुदी ३ विक्रम संवत् १९९० को 'जावद' में प्राप्त हुआ। विक्रम संवत् २००८ आषाढ़ शुक्ला ८ को 'भीनासर' में आप आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपमें गजब की सहनशीलता थी। सम्पूर्ण श्रमण संघ के वृहद साधु सम्मेलन में आपको विक्रम संवत् २००९ में वैशाख सुदी १३ को ४० हजार लोगों के मध्य ३४१ संत और ७६८ साध्वी रत्नों की उपस्थिति में उपाचार्य पद की चादर मारवाड़ के 'सादड़ी' में ओढ़ाई गई, इतने विशाल संघ के एकमात्र स्वामी होते हुए भी आपने संघ में अनुशासनहीनता को प्रशय नहीं दिया। श्रमण संघ में शिथिलाचार को देखते हुए आपने ३० नवम्बर १९६० को श्रमण संघ से अपने आपको अलग कर दिया। आप संगठन के प्रबल हिमायती थे, लेकिन श्रमण संस्कृति को सर्वोपरी मानकर चलते थे। कथनी और करनी आपकी जीवन की विशेषता थी। आपका महाप्रयाण विक्रम संवत् २०१९ माघ कृष्णा दूज को संलेखना संथारा के साथ 'उदयपुर' में हुआ।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

वीर वसुंधरा चित्तौड़ के 'दांता' गांव में वि.सं. १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को एक युगपुरुष का जन्म श्री मोड़ीलालजी पोखरना एवं श्रीमती श्रृंगारबाई के पुत्र के रूप में हुआ। हर्षोल्लास के वातावरण में परिवार वालों ने शुभ नाम 'गोवर्धन' रखा। आपने बचपन से ही अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय देते हुए बालकों की टोली का नेतृत्व किया। आप अपनी माता के प्रति विनयवान तथा आदर भाव का एक आदर्श रूप रहे, अपनी बहन की तपस्या के उपलक्ष्य में जब आपने 'भादसोड़ा' में मेवाड़ मुनि श्री चौथमलजी म.सा. के मुखारविन्द से छठे आरे का वर्णन सुना तो आपका मन संसार से विरक्त हो गया। आपने अल्पकाल में ही सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, २५ बोल, दशवैकालिक सूत्र आदि कंठस्थ कर लिया। वि.सं. १९९६ पौष शुक्ला अष्टमी को कपासन में आपकी भव्य दीक्षा आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न हुई। आपने दीक्षा अंगीकार कर अल्पकाल में सैकड़ों थोकड़े कंठस्थ करने के साथ ही प्रमाणनय तत्वालोक, षट्-दर्शन समुच्चय, स्याद्वाद मंजरी आदि अनेक ग्रंथों का तलस्पर्शी गहन अध्ययन करते हुए जैन आगमों के गहन गंभीर रहस्य का अपनी निर्मल प्रज्ञा से अध्ययन किया। वि.सं. २०१४ की आसोज शुक्ला द्वितीया को आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. ने आपकी तीक्ष्ण प्रज्ञा को **शेष पृष्ठ २२ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २१ से... देख आपको साधुमार्गी संघ के युवाचार्य पद के रूप में उदयपुर के राजमहल में प्रतिष्ठापित किया। आपश्री जी ने सूझ-बूझ से संघ के विकास हेतु कई आयाम प्रदान किये। आपने गुरु की आग्लान भाव से सेवा करते हुए एक आदर्श पेश किया। वि.सं. २०१९ माघ कृष्ण द्वितीय को आप अष्टम् पाट पर 'उदयपुर' में आसीन हुए। आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचना सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोगमति सम्पदा, संग्रह परिज्ञा सम्पदा से ओत-प्रोत आचार्यदेव ने जिनशासन की भय जाहोजलाली की। आपने समता कवच धारण करके सत्य सिद्धान्त का शंखनाद कर शिथिलाचार के चक्रव्यूह का भेदन कर श्रमण संस्कृति के प्रति सजग रहे। आपने आचार्य पद के पश्चात् जिनशासन की जो भव्य प्रभावना की, उसे देख लोगों को पंचम आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की भविष्यवाणी की याद दिलाई, कि मुझे क्या देखते हो, आठवां पाट जिनशासन को और भी दैदीप्यमान करेगा, यथार्थ रूप में विकट मोड़ में आपश्री की समता बेजोड़ रही। आचार्यदेव ने अपने आचार्य काल में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि राज्यों में हजारो किलोमीटर की पदयात्रा के दौरान 'मालवा' में धर्मपाल समाज विकास हेतु क्रान्ति कर 'बलाई' समाज को प्रतिबोधन दिया। अपने शासनकाल में लगभग ३५० दीक्षों प्रदान कर शासन में महत्ती प्रभावना की। स्थानकवासी जैन समाज के पिछले ५०० वर्षों के इतिहास में 'रतलाम' में एक साथ २५ दीक्षा देकर एक नवीन इतिहास की सर्जना की। समता दर्शन एवं समीक्षण ध्यान को देकर प्राणीमात्र पर महान् उपकार किया, संघ आपका ऋणी रहेगा। वि. सं. २०५६ कार्तिक बदी ३ को 'उदयपुर' में संलेखना संथारा से आपका महाप्रयाण हो गया।

नवम पाट पर विद्यमान वर्तमान आचार्य श्री रामेश

जिन शासन क्षितिज में साधुमार्गी संघ का विशिष्ट स्थान है, समय-समय पर अनेक महान् क्रान्तिकारी प्रभावशाली आचार्यों ने इस संघ को पल्लवित, पुष्पित एवं संवर्धित किया है, इसी कड़ी में शास्त्राज्ञ, तरुणतपस्वी, प्रशान्तमना, व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. वर्तमान में संघनायक के रूप में इस विशाल संघ को निरन्तर अभिवृद्धि की और आगे बढा रहे हैं। आपका जन्म 'देशनोक' के भूरा कुल में विक्रम संवत् २००९ चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को रत्नधारिणी माता गवरा की कुक्षि से हुआ।

आपके पिता का नाम नेमीचंदजी था। बचपन से ही आपको अपने पारिवारिकजनों से सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। बाल्यावस्था से ही आप प्रखर मेधावी एवं बुद्धिशील व्यक्तित्व के धनी थे। 'जवाहर किरणावली' की कथा पढ़ने से आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ एवं आपने वि.सं. २०३१ माघ शुक्ला १२ को 'देशनोक' में समताविभूति आचार्य श्री नानेश के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा अंगीकार की। आपश्री में विनय, अनुशासन एवं समय की सजगता को ध्यान में रखते हुए आचार्य श्री नानेश ने वि.सं. २०४७ आसोज सुदी दूज को 'चित्तौड़गढ़' में मुनिप्रवर के पद से अलंकृत किया। आपश्री अप्रतिम प्रतिभा के धनी एवं आगमों के गूढ़ व्याख्याता हैं। आपकी इस विशेषता के कारण आप शास्त्रज्ञ एवं परमागम रहस्यज्ञाता की उपाधि से सुशोभित हुए। आपकी सारणा, वारणा व धारणा के गुणों से प्रभावित होकर वि.सं. २०४८ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को 'बीकानेर' के राजमहल में आपको युवाचार्य पद से अभिषिक्त किया गया। आप व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक व आपकी सद्प्रेरणा से लाखों लोग कुव्यसनों का त्याग कर सद्मार्ग की ओर अग्रसर हुए हैं। आपश्रीजी ने भारत के राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल एवं आन्ध्रप्रदेश आदि प्रांतों में विचरण कर जिनशासन की भव्य प्रभावना की, अभी तक आपने १९८ दीक्षा प्रदान कर तिन्नाणं और तारियाणं के पद को सार्थक किया है। साधुमार्गी संघ के इतिहास में प्रथम बार आपने एक साथ छः मुमुक्षु भाईयों को दीक्षा प्रदान कर नवइतिहास का सृजन किया है।

।।जय जिनेन्द्र, जय गुरु राम।।

हुक्म संघ के नवम पट्टधर, जन-जन की आस्थाओं के केंद्र, उत्क्रांति प्रदाता, युग निर्माता, आगमज्ञाता श्रीमद जैनाचार्य १००८ श्री रामलालजी म.सा. के वर्ष २००० से चातुर्मासष्ठ

वर्ष चातुर्मास स्थल	
२००० जयपुर	२०१३ मैसूर
२००१ गंगाशहर भीनासर	२०१४ बैंगलोर
२००२ सरदारशहर	२०१५ हैदराबाद
२००३ बड़ी सादड़ी	२०१६ मुम्बई
२००४ चितौड़गढ़	२०१७ सूरत
२००५ अमरावती	२०१८ रतलाम
२००६ इंदौर	२०१९ जोधपुर
२००७ रायपुर	२०२० महामंदिर, जोधपुर
२००८ कोलकाता	२०२१ यावर
२००९ दुर्ग	२०२२ उदयपुर
२०१० राजनांदगांव	२०२३ निमच
२०११ चैन्नई	२०२४ भीलवाड़ा
२०१२ मदुरांतकम	२०२५ देशनोक
	२०२६ बिकानेर (संभावित)

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जीवन में जो समता को धारण करते हैं वही संत व श्रावक है-प्रसन्नसागर महाराज

जयपुरः साधना महोदधि परम पूज्य अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ का १८ जनवरी २०२६ प्रातः ८:०० बजे अग्रवाल कॉलेज सांगानेरी गेट से जोहरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार, चौड़ा रास्ता, न्यू गेट होते हुए रामनिवास बाग स्थित यूनियन क्लब फुटबॉल ग्राउंड सुभाष जैन राजस्थान जैन सभा, विनोद कोटखावदा, कैलाश जैन छाबड़ा, जुलूस संयोजक राकेश गोधा के कुशल नेतृत्व में भव्य ऐतिहासिक जुलूस पहुंचा। धर्म सभा को संबोधित करते हुए परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन जीना सीखना चाहिए, जीवन में क्षमता का भाव रखना चाहिए जो समता को धारण करते हैं वही संत व श्रावक हैं। पुण्य का पैसा पुण्य में ही लगाना चाहिए, उन्होंने कहा कि जीवन अनमोल है, जिन्होंने मानव जीवन प्राप्त किया है, उसका कोई मोल नहीं अनमोल है और जिन्होंने जैन कुल में जन्म लिया, उनका जीवन तो बेहद अनमोल है। आचार्य श्री ने कहा मैं जयपुर महानगर में मन के मैल को धोने आया हूं, चारित्र शुद्धी विधान के माध्यम से, उन्होंने अपने उदबोधन में स्पष्ट कहा कि आप अपने जीवन में किसी की शिकायत नहीं करेंगे और किसी से कुछ नहीं मांगेंगे तो ही जीवन धन्य होगा। आचार्य श्री ने कहा कि प्रातः उठते ही सर्वप्रथम किसान, सैनिक, माता-पिता, गुरु और परमात्मा को धन्यवाद करना चाहिए, जिनके उपकारों से हम अपना जीवन कुशलता और संपन्नता से जी रहे हैं।

धर्मसभा को परम पूज्य उपाध्याय श्री पियूष सागर जी महाराज, परम पूज्य प्रवर्तक मुनिश्री सहज सागर जी महाराज ने संबोधित किया।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि जुलूस में जयपुर महानगर की विभिन्न कालोनियों से पुरुष महिला हजारों की संख्या में उपस्थित थे, ऐतिहासिक शोभा यात्रा में १२५१ महिलाएं मंगल कलश लेकर शोभायमान हो रही थी, जुलूस में बैंड बाजों के साथ स्थान-स्थान पर पुष्प वृष्टि एवं श्रावकों ने पाद् प्रक्षालन व मंगल आरती की। सभा के पश्चात आचार्य श्री ने गांधीनगर की ओर विहार किया, जहां आई.ए.एस. कुलदीप रांका ने भव्य अगुवानी की, आहार चर्या भी यहीं हुई, प्रवास गांधीनगर में रहा। मंच का कुशल संचालन ब्र. तरुण भैय्याजी ने किया।

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

मुंबईः वीर के वीर राम के राम अभिनव कार्यक्रम मुंबई में श्री साधुमार्गी जैन संघ मुंबई द्वारा, जीतो के चेयरमैन पृथ्वीराज कोठारी व राष्ट्रीय अध्यक्ष वीर पिता नरेन्द्र गांधी एवं अन्य गणमान्य व सकल जैन समाज की उपस्थिति में तेरापंथ भवन मुंबई में संपन्न।

'राम गुरू का है संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश' अभियान के अंतर्गत राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय उदासर जिला बीकानेर में व्यसन मुक्ति संस्कार जागरण कार्यक्रम २०-१-२०२६ को संपन्न।

ब्यावर राजस्थान में दीक्षार्थी अनिश कांठेड़ ब्यावर का शानदार वरघोडा व अभिनंदन साधुमार्गी जैन संघ व सकल जैन समाज ब्यावर द्वारा संपन्न।

जीतो प्रशासनिक प्रशिक्षण फाऊंडेशन के प्रेसिडेंट श्री गौतम जी जैन दिल्ली, चीफ सेक्रेटरी मयूर जी जैन दिल्ली ने आज गुरू दर्शन सेवा का लाभ लिया, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक समिति उदासर जिला बीकानेर ने साहित्य भेंटकर उनका बहुमान किया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

बेंगलुरु के रतन चंद शांताबाई भंडारी द्वारा सात दिवसीय हवाई संघ यात्रा गुरुवार को राजस्थान के लिए रवाना हुई। यात्रा के दूसरे दिन सीरियारि में आचार्य भिक्षु समाधि स्थल पर भक्ति संध्या का आयोजन किया गया,जिसमें प्रसिद्ध भजन कलाकारा अभिलाषा सुराणा ने एक से बढ़कर एक मनभावन भजनों की प्रस्तुति दी, जिससे श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। शांताबाई भंडारी एवं सभी ने भिक्षु समाधि स्थल पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। महेंद्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा 'धर्म स्थल आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ऊर्जा के केंद्र होते हैं वहां पर दर्शन करने से मन को सुकून मिलता है'।

श्री नवदुर्गा सेवा ट्रस्ट द्वारा शुक्रवार २३ जनवरी को कामाक्षीपाल्या आर एन एम कन्वेंशन हॉल में बसंत पंचमी मां सरस्वती पूजा महोत्सव का आयोजन थे। ट्रस्ट के सदस्यों ने गौ प्रेमी महेंद्र मुणोत को मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित किया।

कर्नाटक राज्य विकल चेतना क्रीडा पटुगल संघ द्वारा ३१ जनवरी को बेंगलुरु आर्ट्स कॉलेज खेल मैदान में राज्य स्तरीय पुरुष पैरासाइटिंग वॉलीबॉल टूर्नामेंट २०२६ मारुति मेडिकल्स कप का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में पैरालंपिक कमिटी आफ इंडिया के डॉक्टर सत्यनारायण, अशोक डिआर, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी प्रशांत कुमार, पी कुमारस्वामी उपस्थित थे। संघ के पदाधिकारियों ने गौ प्रेमी महेंद्र मुणोत को मुख्य अतिथि के रूप में सम्मानित किया।

किसान प्रकृति के सबसे करीब होता है जो प्रकृति के करीब होता है। वह ईश्वर ईश्वर के करीब होता है, मेरे देश का किसान दिवस लाचार या मजबूर नहीं, इस देश का स्वाभिमान है, किसान अपने हाथ में हल को पड़कर अपने हथेली की रेखाओं को अवश्य को दिया है, लेकिन उसने देश के भाग्य की रेखाओं को कभी मिटने नहीं दिया, यही वह जज्बा है जिसके आगे पूरा देश नतमस्तक है। वर्तमान में किसानों के बच्चे पढ़ाई करके गांवों को छोड़कर शहरों में जा रहे हैं यह चिंता का विषय है क्योंकि कृषि एवं पशुपालन से जुड़े रहकर हम देश को समृद्ध बना सकते हैं, यह विचार महेंद्र मुणोत ने विमला बाई मोतीलाल मुणोत, राजकीय पशु चिकित्सा केंद्र लांबिया में व्यक्त किये। इस अवसर पर बेंगलुरु निवासी सुरक्षा महेंद्र मुणोत, भाग्यवंती हंसराज मुणोत, पूर्व सरपंच मदनलाल, पशु चिकित्सक अक्षय शर्मा, पशु चिकित्सा कर्मी चेनाराम, मनोहर चौधरी, मोहनलाल प्रजापत एवं बड़ी संख्या में गांव के किसान उपस्थित थे।

कुवेम्पु वरिष्ठ नागरिक कल्याण संरक्षण समिति द्वारा हम्पी नगर पुस्तकालय में आयोजित १२१वीं कुवेम्पु जयंती समारोह के दौरान वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करते हुए कांग्रेस नेता प्रदीप कृष्णा, समाजसेवक महेंद्र मुनोत, पूर्व पार्षद डॉ.राजू, पूर्व पार्षद आनंद होसूर, वेंकटेश तथा समिति के पदाधिकारी।

वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर श्री नवदुर्गा सेवा ट्रस्ट द्वारा कामाक्षीपल्या स्थित आरएनएम कन्वेंशन हॉल में माँ सरस्वती पूजा उत्सव का आयोजन किया गया, बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने ज्ञान, बुद्धिमत्ता, मेधा, कला और संगीत की देवी माँ सरस्वती की पूजा की। स्थानीय कलाकारों ने स्तोत्रों की प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि महेंद्र मुनोत ने माँ की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया, इसके पश्चात अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि देवी की कृपा उन्हीं पर होती है जिन्हें माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त होता है, ट्रस्ट अध्यक्ष मुन्ना सिंह, डॉ. जयदेव, संतोष सिंह तथा अन्य सदस्यों ने श्री मुनोत का सम्मान किया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

नकारात्मक सोच से ही मन दुःखी, परेशान और हैरान रहता है-अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

जयपुरः अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ गुलाबी नगरी जयपुर राजस्थान में, उनके सानिध्य में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम संपन्न हुए, उसी श्रृंखला में उपस्थित गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि नकारात्मक सोच से ही मन दुःखी, परेशान और हैरान रहता है और सकारात्मक सोच से मन शान्त और चेहरा प्रसन्न बना रहता है, सोच को सकारात्मक बनाने से निगेटिव शब्द भी पोजिटिव हो जाते हैं, जैसे --

⇨ मस्त राम मस्ति में, प्रभावना हो बस्ती में।

⇨ अपना काम बनता - मन्दिर में जाये जनता।

⇨ यदि सीधी उंगली से घी ना निकले तो घी को गर्म कर देना चाहिए।

निगेटिव शब्द से पोजिटिव सोच ऐसे बना सकते हैं, जैसे --

- जलन - खुद को बेहतर बनाने का तरीका।
- नाराज़गी - संवाद करने को प्रेरित करती है।
- हार - अभ्यास का हिस्सा।
- दुविधा - सही निर्णय लेने का रास्ता।
- अशान्ति - अपने भीतर देखने का अवसर।
- डर - आगे बढ़ने की हिम्मत करना, जीत का जज्बा पैदा करना।
- आलोचना - बेहतरीन बनने का समय।
- निराशा - नई दिशा खोजने का सही समय।
- गलती - अनुभवी बनने का पाठ।
- अकेलापन - खुद से जुड़ने का अवसर।
- दबाव - भीतर की हिम्मत को जगाना।
- संघर्ष - भीतर के जुनून को पैदा करना।
- कमजोरी - मन को मजबूत करने का वक्त।

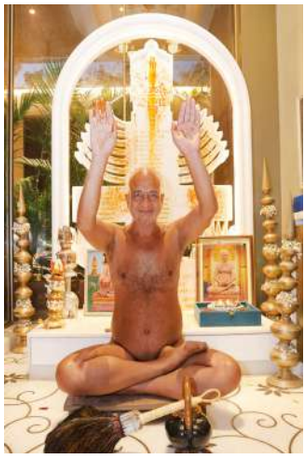

- अन्धेरा - रोशनी की कद्र करना सिखाता है।
- संशय - गहराई से सोचने की शुरूआत।
- उदासी - मन को सम्भालने का समय।
- थकान - रूकना और मन को समझाना।

हर नकारात्मक शब्द में सम्भावना छिपी है, जरूरत है, उसे सही नजर से देखने की, क्योंकि सारा खेल मन की सोच का है, मन अच्छा तो सब कुछ अच्छा और मन खराब तो सब कुछ खराब...!!!

-नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

इंजि. प्रतीक पाटनी चिकलठाणा का सर्वोच्च तृतीय पुरस्कार घोषित

चिकलठाणा महाराष्ट्रः औरंगाबाद के गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज द्वारा आयोजित मॉडल लिमिटेड नेशन्स (MUN) अंतरराष्ट्रीय संबंध का अनुकरण करने वाले शैक्षणिक प्रक्रिया में देश-विदेश के विद्यार्थी पढते हैं, ऐसे ही यूनाइटेड नेशंस कमीशन ऑन द स्टेट ऑफ़ वीमेन (UNCSW) के सम्मुख औरंगाबाद के गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र प्रतीक पाटनी ने 'घाणा' देश को अत्यंत कुशलता, प्रतिभा पूर्ण, विद्वतापूर्ण, अभूतपूर्व अप्रतिम पद्धति से पेश किया, अपने राष्ट्र का सम्मान बढ़ाते हुए उत्तम प्रदर्शन किया, जिसके लिए आपको राष्ट्रीय स्तर का तृतीय पुरस्कार घोषित किया गया। इंजीनियरिंग क्षेत्र में यह सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार है, प्रतीक पाटनी सुविख्यात समाजसेवी, पत्रकार, लेखक एम सी जैन के पोते, प्राध्यापक डॉ राजेश एम. पाटनी के भतीजे व दिनेश पाटनी के सुपुत्र हैं।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

जय गौ माता!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

सुदेश जे. खारीवाल
कार्यकारिणी सदस्य साधुमार्गी जैन संघ
निवासी जावरा जिला रतलाम
भ्रमणध्वनिः ९३०२५१०८५०

सुदेशजी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि सभी जैन बन्धु तीर्थंकर महावीर के अनुयाई हैं और सभी '२४ तीर्थंकर' के बताए मार्ग का अनुसरण करते हुए 'णमोकार महामंत्र' जपते है।

हम भले ही पंथों में अलग-अलग हों या गुरु अलग-अलग हों पर सबका मूल धर्म एक ही है, इसी को आधार मानकर हमें 'जैन 'एकता' के लिए प्रयास करना चाहिए। 'एकता' होगी तो ही हमारा समाज संगठित होगा और आगे बढ़ेगा। आकड़ों की बात करें तो देश की जनसंख्या में जैन लगभग ०.४ प्रतिशत एवं देश की अर्थव्यवस्था के अंतर्गत कर संग्रह में २४ प्रतिशत हिस्सा है, हम जैन एक रहेंगे तो समाज, नगर, प्रदेश और देश-दुनिया में हमारी शक्ति में वृद्धि होगी और पहचान कायम रहेगी, जितनी हम में एकता होगी उतनी ही ताकत बढ़ेगी और समाज विकास के मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

'पर्वाधिराज पर्युषण' एक होकर मनाया जाए तो नेशनल हॉलिडे मिल सकेगा, फलस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर स्लाटर हाउस बंद कराए जा सकेंगे, जीवदया का लाभ ही नहीं, अहिंसा की पहचान बढ़ेगी, जिस तरह एक उंगली कोई कार्य नहीं कर सकती, वहीं पांच उंगलियां मुट्ठी बन जाए तो वह ताकत बन जाती है, इस तरह जैन समाज को भी इकट्ठा होना होगा।

आज की युवा पीढ़ी शिक्षा प्रणाली के साथ इतनी व्यस्त है कि उसके पास अपने ग्रहस्थ जीवन को सीखने-समझने के लिए ही समय नहीं है तो वह धार्मिक शिक्षा व समाज को समय कहां से देंगे?

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, शास्त्रों के अनुसार गाय माता में ३३कोटि देवी-देवताओं का वास माना गया है, गाय की सेवा सबसे बड़ी सेवा मानी जाती है।

सुदेश जी का परिवार मूलतः 'मारवाड' का निवासी है, आपका परिवार कई पीढ़ियों से रतलाम जिले में स्थित 'जावरा रियासत' का निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'जावरा' में ही संपन्न हुई है, यहां कृषि एवं रियल एस्टेट के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी कार्यरत हैं। साधुमार्गी जैन संघ के साथ ही मालवा प्रांत से धर्मपाल के क्षेत्र में भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई सेवा संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत!

- जिनागम

मनोहर औरा
व्यवसायी व समाजसेवी
मनावर, धार निवासी
भ्रमणध्वनिः ९८९३७७७१३१

मनोहर जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जब तक समाज में संप्रदायवाद और पंथवाद रहेगा, तब तक समाज में एकता होना असंभव है, क्योंकि इसी के कारण मनमुटाव और द्वेष की भावना का निर्माण होता है। समाज में एकता स्थापित करनी है तो पंथवाद समाप्त करना होगा और इसके लिए हमारे गुरु भगवंतों को एकसाथ-एकमंच पर आना होगा, साथ ही श्रावकों को भी इस कार्य के लिए सक्रिय होना होगा, तभी समाज में एकता स्थापित हो सकती है, हमारे त्यौहार एकसाथ-एकरूप में मनाए जाने चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर होती जा रही है, क्योंकि आज एकल परिवार की संख्या बढ़ रही है, बच्चों को पढ़ाई के लिए परिवार से दूर भेज दिया जाता है, जिससे बच्चों को परिवार और समाज सेवा संस्कार ही नहीं मिल पाते जो उन्हें मिलने चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'!

मनोहर जी मूलतः मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित 'मनावर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप स्टेशनरी व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ के सदस्य हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

चंद्रशेखर जैन

राष्ट्रीय संयोजक धर्मपाल संस्कार व बौद्धिक विकास समिति
नागदा जं., जिला उज्जैन निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२५४३१४८१

चंद्रशेखर जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की प्रत्येक बातें हमारे लिए प्रभावशाली हैं, वे नाना गुरु के शिष्य हैं, उन्हें वर्षों तक गुरुदेव का सानिध्य मिला और उनमें नाना गुरुजी की ही छवि दिखती है। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. प्रत्येक श्रावकों को व्यक्तिगत रूप से जानते और पहचानते थे, उनकी स्मृति बहुत ही तीव्र थी, सालों बाद भी श्रावकों को उनके नाम और कार्यों से पहचानते थे, इस तरह आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. उनके पद चिन्हों पर चलते हुए संघ और समाज के लिए समर्पित हैं। समाज उत्थान के लिए चिंतनरत रहते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि समाज में एकता रहेगी, तभी हमारा समाज आगे बढ़ेगा और सुदृढ़ होगा समाज में एकता के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी को धर्म और संस्कारों से जोड़ना जरूरी है, क्योंकि यही हमारे धर्म व समाज के भविष्य है, पर आज जिस तरह परिस्थितियां बनी हैं, अभिभावक अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए परिवार और समाज से दूर भेजते हैं, जिससे उनमें संस्कार नहीं आ पाते, आज दिन प्रतिदिन इसमें कमी ही आ रही है, युवाओं में संस्कार डालना बहुत जरूरी है।

साधुमार्गी जैन संघ द्वारा धर्मपाल प्रवृत्ति समिति द्वारा पूरे प्रांत में जैन पाठशाला का संचालन किया जा रहा है, १२१ गांव में १२५ पाठशालाएं संचालित होती हैं, आज की तारीख में २४०० बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। १५० पाठशाला चलाने का लक्ष्य है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए और उससे अधिक उनकी सेवा और सुरक्षा जरूरी है, जीवदया पर भी आचार्य जी का चिंतन रहता है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान मैं पूर्णतया सहमत हूं, 'भारत' ही हमारी वास्तविक पहचान है।

चंद्रशेखर जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के 'मंदसौर' में संपन्न हुई है, पिछले ५० सालों से आप नागदा उज्जैन में बसे हुए हैं और गैस एजेंसी, टापेर व होंडा स्कूटर बाइक के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी कार्यरत रहते हैं, ४५ सालों तक लायंस क्लब के सदस्य व विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे हैं। भारत में जहां भी समता भवन बनाया जाता है, उसमें आपका १% योगदान रहता है, समता भवन निर्माण समिति, शासकीय कन्या महाविद्यालय समिति, साधुमार्गी सेवा समिति, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के ट्रस्टी हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं।

जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

मनोज डागा

पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अ. भा. साधुमार्गी संघ
बीकानेर निवासी-हावड़ा प्रवासी
भ्रमणध्वनि:९८३०९६०७०८

मनोज जी आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि गुरुदेव जी के बारे में कहना छोटा मुंह-बड़ी बात होगी, उनका जितना व्याख्यान किया जाए, शब्द कम पड़ जाएंगे, सबसे बड़ी बात यह है कि यदि आपके मन में कोई शंका है, जिसका समाधान नहीं मिल रहा है या कोई परेशानी है तो उससे छुटकारा पाना चाहते हैं तो उसका समाधान गुरुदेव जी के व्याख्यान में ही मिल जाता है, आचार्य श्री को 'उत्क्रांती' का जनक कहा जाता है और ऐसे अनुभव एक नहीं कई बार प्राप्त हुए हैं, गुरुदेव जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन.....

'जैन एकता' अपने समाज में बहुत जरूरी है और कोई भी कार्य यदि मिलकर किया जाए तो वह अवश्य संभव होता है और आज के परिपेक्ष में यह बहुत जरूरी भी है, समाज में एकता रहेगी तभी हम सुरक्षित रहेंगे, कहा गया है हम एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे, हमारे त्योहार, संवत्सरी एक साथ एक रूप मनाया जाना चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी धर्म और समाज से जुड़ना चाहती है पर उचित मार्गदर्शन नहीं मिलने के कारण युवा पीढ़ी भ्रमित हो रही है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

मनोज जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बीकानेर' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा हावड़ा, पश्चिम बंगाल में संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। संघ के कार्यकारिणी सदस्य रहे हैं, पाठशाला संयोजक का पद निभाया है और राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष व राष्ट्रीय मंत्री बंगाल-बिहार अंचल के रूप में भी सक्रिय रहे हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

नितिन काला जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
नागौर निवासी-हैदराबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८८५५९३५११

नितिन जी आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री तो जगत के पूजनीय हैं, उनके बारे में कहना छोटा-मुंह बड़ी बात होगी, उनके दर्शन और प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ, उनके व्यक्तित्व की आभा ही निराली थी, उनके प्रवचन शैली बहुत ही सरल और सुगम्य थी, उनका शांत शीतल आचरण मन को लुभाता रहा, गुरुवर के चरणों में शत शत वंदन!

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जैन समाज में एकता तो बहुत जरूरी है, पर यह असंभव सा लगता है, क्योंकि हमारा समाज पंथवाद और संतवाद में बंटा है, आज हमारी संख्या ०.४४% रह गई है, उस पर भी यदि हम इसी तरह पंथ के चक्कर में बिखरे रहेंगे तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, इसलिए समज में एकता होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी बहुत ही समझदार है, वह हर विषय को तर्क के आधार पर अपनाती है और हमारा जैन धर्म वैज्ञानिकता पर आधारित है क्रियाओं से ज्यादा तत्वज्ञान को महत्व दिया जाता है, जैन धर्म का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार होना चाहिए, जिससे युवाओं को भी अपने धर्म की समुचित जानकारी प्राप्त हो सके।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत', इंडिया का अर्थ बहुत ही गलत अर्थों में लिया गया है, यह भरत चक्रवर्ती की भूमि है, इसलिए अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए।

नितिन जी के पूर्वज मूलतः 'नागौर' के निवासी थे, आपका परिवार लगभग १०० सालों से 'हैदराबाद' में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप दाल मिल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक व गुरु सेवा से जुड़े रहते हैं, आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी व मुनि श्री १०८ समत्व सागर जी को अपना आराध्य मानते हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

शेखर छाबड़ा
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष अ.भा.खंडेलवाल दि जैन महासभा, लखनऊ
इंदौर निवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२६५३५४२२

शेखर जी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के बारे जितना कहा जाए उतना कम है, उन्होंने जैन समाज को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया, जैन धर्म को बहुत ऊंचाइयों पर लेकर गए, आचार्य श्री की आभामंडल बहुत निराली थी, दर्शन करते समय निगाहें बस गुरुवर की तरफ ही होती, उनके दर्शन करते समय ऐसा प्रतीत होता था कि साक्षात तीर्थंकर के दर्शन कर रहे हैं, यह हमारा सौभाग्य रहा कि उनके दर्शन का लाभ कई बार प्राप्त हुआ, ऐसा लगता था कि हमेशा गुरुदेव के पास ही रहें, उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन ...

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जैन समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, आज जो परिस्थितिया बन रही हैं, उसमें समाज यदि इकट्ठा रहेगा तो ही आगे बढ़ेगा, धर्म की रक्षा होगी। सर्वप्रथम दिगम्बर जैन समाज के जितने भी पंथ हैं, सबको एकसाथ एकरूप में अंगीकार करना चाहिए, तभी समाज का उत्थान निश्चित है। 'जैन' एक धर्म नहीं एक विचारधारा है, जिसने भी इस विचारधारा को अपना लिया वह 'जैन' है।

आज की युवा पीढ़ी धर्म के प्रति पहले से अधिक जागरूक है, वह उपासना, एकासना जैसी पूजा पद्धतियों को अपना रहे हैं और पूरी निष्ठा के साथ पालन भी कर रहे हैं, धार्मिक और सामाजिक क्रियाकलापों में बढ़-चढ़ कर सहभागी हो रहे हैं, युवा पीढ़ी धर्म को समझने लगी है।

गाय सभी सनातनियों के लिए पूजनीय है, उनका सम्मान अवश्य होना चाहिए, इसीलिए गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य प्राप्त होना चाहिए, आचार्य श्री ने भी इसी पर जोर दिया था, कई गौशालाएं शुरू करवाई थी।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान ही रहनी चाहिए 'भारत' आदिनाथ तीर्थंकर के पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से इस भूखंड का नाम 'भारत' पड़ा है।

शेखर जी के पूर्वज मूलतः राजस्थान के निवासी थे, आपका जन्म उज्जैन व शिक्षा 'मऊ' में संपन्न हुई है, वर्तमान में आप इंदौर में बसे हैं और इंडस्ट्रियल सप्लाय के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही आप कई सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं। अखिल भारतीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष हैं, गत २१ वर्षों से दिगम्बर जैन महासभा लखनऊ के तत्वाधान में युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन इंदौर में किया जा रहा है, जिसमें आपकी बहुत बड़ी भूमिका रहती है, अन्य कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

विजय लोढ़ा

व्यवसायी व समाजसेवी

सोजत रोड निवासी-तमिलनाडु प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४४३२३९८०२

विजय जी आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि गुरुदेव का व्यक्तित्व और आभामंडल देखते ही बनती है, दूर से भी दर्शन करने मात्र से हमारे मन की बेचैनी समाप्त हो जाती है और मन शांत होता है, सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, गुरुदेव के प्रवचन शैली बहुत ही सरल और सुगम्य होती है, वह हर किसी के मन के दुविधा को शांत करते हैं, बालक द्वारा भी पूछे गए प्रश्नों व शंकाओं का उचित समाधान बड़े ही सरल पद्धति से करते हैं। २०१२ में मदुरान्तकम चेन्नई में हुए उनके चातुर्मास के दौरान उनके सानिध्य का अवसर कई बार प्राप्त हुआ, गुरुदेव का सानिध्य हमेशा प्राप्त होता रहे, यही कामना करते हुए उनके चरणों में कोटि-कोटि वंदन....

'जैन एकता' समाज की सबसे बड़ी जरूरत है, 'जैन एकता' रहेगी तभी हमारा समाज आगे बढ़ेगा, संगठित रहेगा और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, जब हमारे पांच महाव्रत एक हैं, तो यह पंथवाद क्यों? हमारे त्योहार व संवत्सरी जैसे पर्व एकसाथ-एकरूप में मनाया जाना चाहिए। आचार्य श्री नानालाल जी ने भी यही प्रयास किया था, चाहे आगे या पीछे किसी एक तिथि पर यदि सभी पंथ एकमत हो जाए तो 'संवत्सरी' एक ही दिन मनाई जाए, ऐसे प्रयासों के माध्यम से ही 'जैन एकता' स्थापित की जा सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है, पर उतना नहीं जितना जुड़ना चाहिए, युवाओं को जोड़ना है तो उन्हें आधुनिक परिवेश व सोशल मीडिया के माध्यम से जोड़ा जा सकता है, जैनिज्म की वास्तविकता से अवगत कराया जाए, तभी युवा पीढ़ी धर्म समाज के प्रति समर्पित रहेगी।

विजय जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'सोजत रोड' के निवासी हैं, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'तमिलनाडु' में ही संपन्न हुई है, यहां आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। सकल जैन नवयुवक संघ के अध्यक्ष व अ.भा. साधुमार्गी जैन महासभा के साहित्य मंडल के संयोजक रहे हैं और भी कई संगठनों में कार्यरत हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

ऍड. सुधीर कुमार जैन

अध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा जैन

जयपुर, राजस्थान निवासी

भ्रमणध्वनि: ९४१४०५०४३२

सुधीर जी आचार्य श्री विद्यासागर जी के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इसमें कोई शक नहीं है कि आचार्य श्री विद्यासागर जी वर्तमान युग के महाज्ञानी और संत थे, उनके प्रवचन शैली अनोखी थी, वे शांत व सौम्य विचारधारा वाले थे।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि आज जैन समाज देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ६३% गौशालाएं जैन समाज द्वारा संचालित है, समाज में एकता ना होने के कारण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व न होने के कारण हमारे समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं है, अपने धर्म और समाज के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए जैन समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है, और इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक जुड़ रही है, युवा धार्मिक व सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी हो रहे हैं, हमारे साधु संतों की कार्यप्रणाली और वक्तव्य से भी युवा पीढ़ी प्रभावित हो रही है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान तो अवश्य मिलना चाहिए, पर यह भी एक दुख का विषय है कि जो गाय दूध देना बंद कर देती है, उन्हें गाय मालिकों द्वारा सड़कों पर छोड़ दिया जाता है, जिससे उनकी बहुत दुर्दशा होती है, सर्वप्रथम गायों की सेवा और सुरक्षा होना बहुत जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि नाम के साथ हमें राष्ट्र भावना पर भी जोर देना चाहिए।

सुधीर जी मूलतः राजस्थान के 'दौसा' जिले के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा 'जयपुर' में संपन्न हुयी है, यहां आप हाईकोर्ट व सेशन कोर्ट में क्रिमिनल अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं। श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय जिनेन्द्र! जय भारत!

-जिनागम

'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें 'हम-सब जैन हैं'

परस्परोपग्रहो जीवानाम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

लोकेश जैन
कोषाध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांत
चित्तौड़गढ़ निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२५०३१६४०

लोकेश जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि सर्वप्रथम तो चारों संप्रदायों के जितने भी फिरके हैं, सभी को एकसाथ- एकमंच पर आना बहुत जरूरी है और इन सब पर समाज का नियंत्रण होना बहुत जरूरी है, भले ही हमारी आमनाय पद्धति अलग-अलग हों, पर हमारे तीर्थंकर एक हैं, णमोकार मंत्र एक है, जो हमें एकसूत्र में बांधता है। 'जैन एकता' होगी तभी हमारा समाज और धर्म दोनों ही सुरक्षित रहेंगे, इसीलिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है।

मेरी एक और विचारधारा है कि जिस दिन 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व मनाया' जाता है, उस दिन सभी जैन परिवार अपने घरों की छत पर जैन झंडे लगाएं, जिससे लोगों में भी जागरूकता निर्माण होगी, जिससे अन्य समाज के सम्मुख भी हमारे जैन होने का संदेश जाएगा।

आज मात्र २०% युवा अपने धर्म और समाज के प्रति समर्पित है ८०% युवा अपने धर्म और संस्कारों से दूर हो चुके हैं, इसका कारण परिवार है, क्योंकि परिवार से उन्हें वह संस्कार ही नहीं मिल पा रहे, जिससे युवा पीढ़ी धर्म और समाज से जुड़े, आज की युवा पीढ़ी को शिक्षा के लिए बाहर भेज दिया जाता है, जिससे वह धर्म समाज परिवार से दूर रहने लगते हैं, तो संस्कार कहां से आएंगे। युवाओं को धर्म और संस्कार से जोड़ना है तो उन्हें आधुनिक परिवेश में धर्म और मनोरंजन के माध्यम से जोड़ा जा सकता है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, गाय की सेवा बहुत जरूरी है

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

लोकेश जी मूलतः राजस्थान स्थित पांडोली स्टेशन (चित्तौड़गढ़) के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप गुजरात अहमदाबाद में बसे हुए हैं, आापने सीए की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में स्टेनलेस स्टील के कारोबार से जुड़े हैं, ओसवाल बड़े साजन मेवाड़ समाज के महामंत्री पद पर कार्यरत हैं। जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांत के कोषाध्यक्ष हैं, अन्य कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हुए हैं। जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

आचार्यश्री विद्यासागर जी की प्रेरणा व आशीष से संचालित प्रकल्प

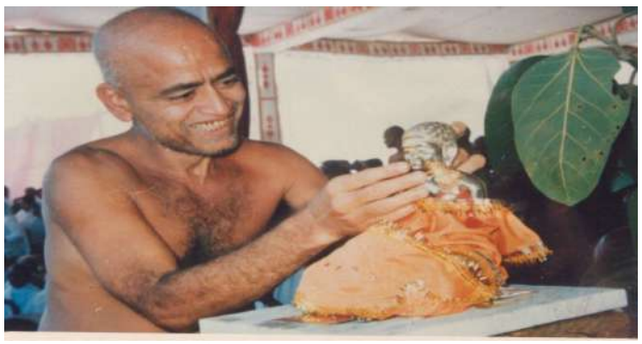

➪ बुंदेलखण्ड का सिरमौर कुण्डलपुर में बड़े बाबा का विशाल पाषाण मंदिर निर्माण।

➪ नर्मदा के नाभि कुण्ड, रेवातट नेमावर में सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र का निर्माण (पंच बालयति एवं त्रिकाल चौबीसी मंदिर)।

➪ अतिशय क्षेत्र रामटेक (नागपुर,महाराष्ट्र) में विशाल पंचबालयति व चौबीसी पाषाण जिनालय।

➪ नर्मदा नदी का उद्गम स्थल अमरकंटक में सर्वोदय तीर्थ २४ टन वजन की धातु प्रतिमा व विशाल पाषाण मंदिर निर्माण

कुंडलपुर सिद्ध क्षेत्र

➪ चंद्रगिरि डोंगरगढ, छत्तीसगढ़ में विशाल पाषाण प्रतिमा व त्रिकाल चौबीसी का पाषाण युक्त मंदिर।

➪ परवारपुरा नागपुर (महाराष्ट्र) में विशाल पाषाण जिनालय।

➪ संस्कारधानी जबलपुर की पिसनहारी मढ़िया जी में भव्य नंदीश्वर रचना (१९९३ में पूर्ण)।

➪ रामपुरा, गोपालगंज व भाग्योदय तीर्थ सागर में पाषाण मंदिर निर्माण।

➪ बीना बारहा, कोनीजी (पाटन), बहोरीबंद, पनागर, थूवौन जी, ईशुरवारा एवं पजनारी आदि तीर्थ क्षेत्रों का विकास।

➪ सिलवानी (जिला-रायसेन) एवंटडा (जिला-सागर) में पाषाण निमित जिनालय।

➪ शीतलधाम विदिशा (पाषाण निर्मित समवसरण जिनालय), हबीबगंज भोपाल व पटनागंज (रहली में पाषाण मंदिर निर्माण कार्य प्रगति पर)।

➪ मानव सेवा का चिकित्सा संस्थान भाग्योदय तीर्थ सागर जहाँ सर्वसुविधा युक्त वार्ड, २५० बिस्तर अस्पताल, नर्सिंग कॉलेज, फार्मेसी कॉलेज, डी. एम. एल. टी. कॉलेज, एम. आर. आई. व सीटी स्केन, कैथलैब आदि की सुविधा।

➪ ज्ञान संस्कारों की स्थली, प्रतिभास्थली में बी. एड. व्रस्नातकोत्तर उपाधि उच्च शिक्षा सम्पन्न बाल ब्रह्मचारिणी बहिनों द्वारा बालिकाओं का अध्यापन कार्य। आवासीय सुविधा युक्त-१, तिलवाराघाट जबलपुर (लगभग ८०० बालिकायें),
२. रामटेक महाराष्ट्र (लगभग २०० बालिकायें)
३. चंद्रगिरि डोंगरगढ (छ. ग.) (लगभग २५० बालिकायें)।

➪ मध्यप्रदेश व अन्य प्रांतों में लगभग ३५० जैन पाठशालाओं में लगभग २५००० बालक/बालिकाओं को धार्मिक ज्ञान संस्कार पाने हेतु आशीष प्राप्त।

➪ दिल्ली में अनुशासन नाम से भाईयों के लिए प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान।

➪ इंदौर में प्रतिभा प्रतीक्षा (कन्या आवासीय छात्रावास)।

➪ प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान, मढ़िया जी जबलपुर को शुभाशीष व मार्गदर्शन।

➪ शांतिधारा दुग्ध योजना, बीना बारहा (सागर) में ५०० देशी गिर गाय का पालन व दुग्ध उत्पादन।।

➪ जीवदया के अभ्यारण्य दयोदय नाम से लगभग १३० गौशालाओं में एक लाख से ऊपर पशुधन शरण व संरक्षण प्राप्त तथा भोपाल में गोबर गैस फिलिंग प्लांट घरेलू रसोई गैस सिलेण्डर में।

➪ मूकमाटी महाकाव्य पर देश/विदेश से लगभग १००० समीक्षायें प्राप्त। भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्रकाशित पी. एच. डी. शोध प्रबंध सहित।

➪ हथकरघा विकास व स्वरोजगार हेतु देश के ३५ स्थानों में १००० से अधिक भाई-बहिनों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

➪ अशुद्ध डिब्बा बंद हानिकारक खाद्य सामग्री से जनता की बचाने हेतु 'पूरी मैत्री' का निर्माण।

➪ अतिशयक्षेत्र बहोरीबंद कटनी में श्री शांतिनाथ विद्यासागर आरोग्य केन्द्र की स्थापना, जिसमें लाखों गरीब मरीज निःशुल्क स्वास्थ्य लाभ ले चुके हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी की प्रेरणा से बने कुछ मंदिरों के बारे में जानकारीः

● भाग्योदय तीर्थ, सागर

सागर के खुरई रोड पर बन रहे इस मंदिर को दुनिया का सबसे बड़ा चतुर्मुखी जैन मंदिर माना जा रहा है, यह मंदिर लाल और पीले पत्थरों से बनाया जा रहा है, इसकी ऊंचाई २१६ फुट होगी और इसमें चारों दिशाओं में हाथी की मूर्तियां होंगी।

● अमरकंटक का जैन मंदिर

अमरकंटक जैन मंदिर

इस मंदिर की आधारशिला ६ नवंबर, २००३ को आचार्य श्री विद्यासागर जी के साथ तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत ने रखी थी, यह मंदिर समुद्र तल से करीब ३,५०० फुट की ऊंचाई पर मैकल पर्वतमाला के शिखर अमरकंटक में बना है।

● नेमावर का जैन मंदिर

नेमावर जैन मंदिर

नर्मदा तट पर बन रहे इस मंदिर का निर्माण आचार्य श्री विद्यासागर जी की प्रेरणा से हुआ है।

राजनांदगांव का दिगम्बर जैन मंदिर नेमिनाथ भगवान

इस मंदिर के निर्माण का भूमिपूजन आचार्य श्री विद्यासागर जी के मार्गदर्शन में हुआ था।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर के तत्त्वाधान में 'रुणवाल एंथोरियम' स्पिरिचुअल सेंटर का उद्घाटन

मुंबईः आध्यात्मिक क्षेत्र की प्रवृतियों में विस्तार हेतु श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर के तत्त्वाधान में स्पिरिचुअल सेंटर का उद्घाटन रुणवाल एंथोरियम मुलुंड, एलबीएस रोड, मुंबई में पूज्य गुरुदेव राकेशजी के हाथों संपन्न हुआ, इस अवसर पर सुभाषचंद्रजी रुणवाल, चंदाजी रुणवाल, संदीपजी रुणवाल, सुबोधजी रुणवाल, संगीता ललवाणी, विकास ललवाणी, मेरोथॉन ग्रुप के चेतनी शाह, महेश शाह, मुथा ग्रुप चेन्नई के सुरेश मुथा एवं मधुजी मुथा सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

६ हजार स्क्वेयर फिट में बना मुलुंडः स्पिरिचुअल सेंटर का उद्घाटन मुंबई शहर के लिए माईल स्टोन साबित होगा। मुलुंड के लिए रोशन की किरण के रूप में कल्पना किया गया, यह सेंटर चिंतन, सीखने और आंतरिक विकास के लिए एक जगह है, सेंटर में पूज्य गरुदेवश्री के प्रवचन, विजडम रिट्रीट, होलिस्टिक वेलनेस प्रोग्राम, मेडिटेशन रिट्रीट, यूथ इनिशिएटिव, डिवाइनटच क्लासेस, योग, एरियल योग और साऊंड हीलिंग वर्कशॉप आयोजित किए जाएँगे।

श्री आत्मसिद्धि शास्त्र के पैनल का भी अनावरण किया गया, इस उद्घाटन के साथ मुलुंड स्पिरिचुअल सेंटर एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में अपनी यात्रा शुरु करते हुए साधकों को जुड़ने, मनन करने और आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। परम पूज्य गुरुदेव राकेशजी ने रुणवाल परिवार का आभार प्रकट करते हुए कहा कि यह सेंटर वास्तव में धरमपुर जैसा ही बनाया गया है।

बता दें कि रुणवाल परिवार सदा ही शिक्षा, चिकित्सा, साधर्मिकू सेवा एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहा है, जिसकी जितनी अनुमोदना की जाये वो कम है, यह सेंटर खासकर युवाओं को आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर आकर्षित करेगा, गुरुदेव का आगमन होते ही गुरुभक्तों ने गुरुदेव के जयकारे लगाते हुए उनसे आशीर्वाद लेने हेतु उमड पड़ा।

णमोकार तीर्थ में पंचकल्याणक महोत्सव का भारत आयोजन
धर्म से विमुख होने के कारण देश में समस्याएं बढ़ीं : भागवत

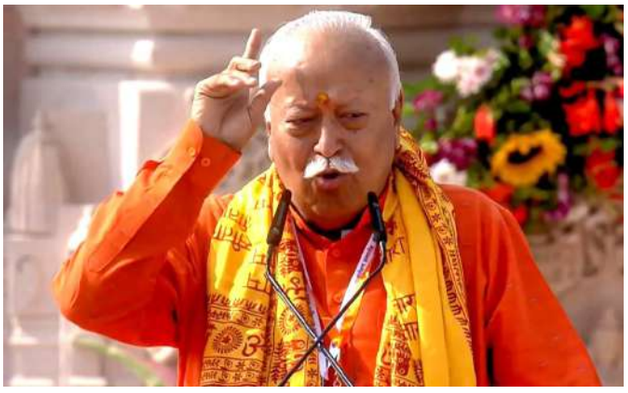

नाशिकः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने नाशिक के चांदवड़ में कहा कि धर्म कर्मकांड नहीं, बल्कि आचरण है। धर्म से विमुख होने के कारण देश में समस्याएं बढ़ी हैं, भारत में हजारों वर्षों की महापुरुषों की परंपरा है, श्रमणधारा और ब्राह्मणधारा जैसे विविध विचारों ने भारतीय संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ प्रमुख भागवत नाशिक की चांदवड़ तहसील के मालसाणे स्थित 'णमोकार तीर्थ' में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव में बोल रहे थे, संघ प्रमुख ने कहा कि भारतवर्ष में सबसे अधिक विविधता होते हुए भी देश एक राष्ट्र के रूप में अखंड बना हुआ है, यही भारत की वास्तविक पहचान है। विविधता में एकता केवल एक नारा नहीं, बल्कि विश्व को दिया गया अनोखा संदेश है। श्री भागवत ने कहा कि साधु-संत आज भी पूरे भारत में यात्राएं करते हैं। मंदिर और पंचकल्याणक महोत्सव कोई नई परंपरा नहीं, बल्कि शताब्दियों से चली आ रही सांस्कृतिक धरोहर हैं, दूसरों को पीड़ा न पहुंचाना और हिंसा न करना, यही भारतीय संस्कृति का मूल संदेश है।

समस्याओं के समाधान के केंद्र हैं तीर्थक्षेत्र : संघ प्रमुख ने कहा कि मनुष्य तो जीवन सुखमय हो, इसके लिए त्रिसूत्री बताई जाती है, किंतु उसे बार-बार दोहराने की आवश्यकता पड़ती है, यह आज की विडंबना है, आज सुविधाएं बहुत है, किंतु सुख कम होता जा रहा है, संपूर्ण सृष्टि को साथ लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, ऐसी व्यवस्था बनानी होगी कि कभी यह न कहना पड़े कि सृष्टि के विनाश का समय आ गया है, उन्होंने कहा कि सृष्टि के कल्याण के लिए निर्मित तीर्थक्षेत्र केवल श्रद्धा के केंद्र नहीं, बल्कि समस्याओं के समाधान के केंद्र हैं, आचार्य कुंथुसागर महाराज और देवकीनंदन महाराज जैसे संत इन तीर्थक्षेत्रों को ऊर्जा प्रदान करते हैं, इसलिए ये तीर्थस्थल पाचन हैं।

‘मैं भारत हूं फाउंडेशन’ द्वारा भेजा गया पत्र

‘कन्नड़’ भाषा में...

ದಿನಾಂಕ: ಫೆಬ್ರವರಿ 7, 2026

ಶ್ರೀ ಥಾವರ್‌ಚಂದ್ ಗೆಹ್ಲೋಟ್,
ಲೋಕ ಭವನ, ಲೋಕ ಭವನ ರಸ್ತೆ,
ಬೆಂಗಳೂರು,
ಕರ್ನಾಟಕ, ಭಾರತ–560001

ಗೌರವಾನ್ವಿತ ರಾಜ್ಯಪಾಲರಾದ ಶ್ರೀಯುತ ಥಾವರ್‌ಚಂದ್ ಜೀ ಅವರೇ,

ವಿಷಯ: ಕರ್ನಾಟಕ ವಿಧಾನಸಭೆಯು India ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ್ ಹೆಸರನ್ನು ಬಳಸಬೇಕೆಂದು ವಿನಂತಿಸಿ ಬರೆದ ತಮ್ಮ ಕಛೇರಿಯ ಪತ್ರದ ಕುರಿತು

ಉಲ್ಲೇಖ :ತಮ್ಮ ಕಚೇರಿಯಿಂದ ಇಮೇಲ್ ಮೂಲಕ ನಮಗೆ ತಲುಪಿದ ಪತ್ರದ ಸಂಖ್ಯೆ ಸಿಆಸುಇ 4 ರಾಸ 2026, ದಿನಾಂಕ : 04–02–2026.

ಜೈ ಭಾರತ್ ! ಕರ್ನಾಟಕ ವಿಧಾನಸಭೆಯಲ್ಲಿ India ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ್ ಹೆಸರನ್ನು ಬಳಸಬೇಕೆಂದು ವಿನಂತಿಸಿ ಅಕ್ಟೋಬರ್ 9, 2025 ರಂದು ನಾವು ಇಮೇಲ್ ಮೂಲಕ ವಿನಂತಿಯನ್ನು ಕಳುಹಿಸಿದ್ದೆವು. ಅದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಂದಿಸಿ ನಮಗೆ ಇಮೇಲ್ ಮೂಲಕ ಪ್ರತಿಕ್ರಿಯಿಸಿರುವುದಕ್ಕೆ ಅನಂತ ಧನ್ಯವಾದಗಳು.

ನಿಮ್ಮ ಕಚೇರಿಯಿಂದ ಬಂದ ಪತ್ರದ ಪ್ರಕಾರ, ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರವು Government of India ಬದಲಿಗೆ "ಗೌವರ್ನಮೆಂಟ್ ಆಫ್ ಭಾರತ್" ಎಂದೂ ಬರೆಯಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವುದರ ವಿಚಾರದ ಕುರಿತು ತಮ್ಮ ಗಮನ ಸೆಳೆದಿದ್ದೇವು. India ಪದದ ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ ಪದವನ್ನು ಬಳಸುವುದು ಅಥವಾ India ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ ಎಂದೇ ಸಂಬೋಧಿಸುವುದು ಸಂವಿಧಾನದ ಕಟ್ಟುಪಾಡುಗಳಲ್ಲವಾದರು. ತಾವೇ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿರುವಂತೆ ಸಂವಿಧಾನದಲ್ಲಿ ಭಾರತ ಮತ್ತು India ಈ ಎರಡೂ ಪದವನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹ ಸಂಗತಿ. ಹೀಗಾಗಿ ಭಾರತ ಅಥವಾ India ಎಂದು ಸಂಬೋಧಿಸುವ ಅಥವಾ ಪದ ಬಳಸುವುದು ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಭಾರತೀಯನ ಇಚ್ಛಾಶಕ್ತಿಯಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುತ್ತದೆ. ಪರಂತು ಇದಕ್ಕಾಗಿ ಯಾವುದೇ ಅಧಿಕೃತವಾದ ಶಾಸನಬದ್ಧ ಆದೇಶದ ಅವಶ್ಯಕತೆ ಇರುವುದಿಲ್ಲ. ಈಗಾಗಲೇ ಭಾರತದ ಕೇಂದ್ರ ಸರ್ಕಾರವು India ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ್ ಎಂದು ಬರೆಯಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿರುವುದು ತಮಗೆ ತಿಳಿದಿರುವ ಸಂಗತಿ. ಆದಕಾರಣ ನಮ್ಮ ನಿಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಸ್ವಇಚ್ಛಾಶಕ್ತಿಯಿಂದ ಮತ್ತು ಸ್ವಯಂ ಪ್ರೇರಣೆಯಿಂದ ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರವೂ ಸಹ ಇನ್ನು ಮುಂದೆ ತನ್ನ ವಿಧಾನಸಭೆಯಲ್ಲಿ, ವಿಧಾನ ಪರಿಷತ್‌ನಲ್ಲಿ, ಸರ್ಕಾರಗಳ ಆದೇಶ, ನಡವಳಿಗಳಲ್ಲಿ, ಪತ್ರ ವ್ಯವಹಾರಗಳಲ್ಲಿ India ಬದಲಿಗೆ ಭಾರತ ಎಂದು ಬರೆಯಲು/ಬಳಸಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಅದಕ್ಕೆ ಕಾರ್ಯಾಂಗದ ಎಲ್ಲಾ ಕಚೇರಿಗಳ ನಡವಳಿಗಳಲ್ಲೂ ಭಾರತ ಪದವನ್ನು ಬಳಸಲು ಪ್ರೇರೇಪಿಸಬೇಕೆಂದು ತಮ್ಮಲ್ಲಿ ಪ್ರಾರ್ಥಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತೇವೆ. ಹೀಗೆ ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರವು ಒಂದು ಸಣ್ಣ ಪ್ರಯತ್ನವಾಗಿ ಬದಲಾವಣೆ ತಂದರೆ ಮುಂದೆ ಅದು ದೊಡ್ಡ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಆಧುನಿಕ "ಭಾರತ" "ವಿಕಾಸ" ಆಗುವುದರಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಸಂಶಯವಿಲ್ಲ.

ಗೌರವಾನ್ವಿತ ರಾಜ್ಯಪಾಲರಾದ ಶ್ರೀಯುತ ಥಾವರ್‌ಚಂದ್ ಜೀ ಅವರೇ, ನಾವೆಲ್ಲರೂ 'ಭಾರತ್ ಮಾತಾ ಕಿ ಜೈ' ಎಂದು ಉದ್ಘೋಷಿಸಿ ಅಭಿಮಾನ ಸ್ವಾಭಿಮಾನವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುತ್ತೇವೆ. ಲಕ್ಷಾಂತರ ವರ್ಷಗಳಿಂದ ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಹೆಸರು 'ಭಾರತ' ಎಂದೇ ಕರೆಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಪರಂಪರೆಯ ಯಾವುದೇ ಹೆಸರನ್ನು ಎಂದಿಗೂ ಅನುವಾದಿಸಲು ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ ಇದಕ್ಕೆ ಭಾರತ ಪದವೂ ಹೊರತಲ್ಲ. ಅದೇ ನಮ್ಮ ಹೆಗ್ಗಳಿಕೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ದಯಮಾಡಿ ತಾವುಗಳು ಕರ್ನಾಟಕ ವಿಧಾನಸಭೆಯಲ್ಲಿ India ಎಂಬ ಹೆಸರನ್ನು ಎಲ್ಲಿ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಲಾಗಿದೆಯೋ ಅಲ್ಲಿ "ಭಾರತ" ಎಂಬ ಪದ ಅಥವಾ ಹೆಸರನ್ನು ಬಳಸಬೇಕೆಂದು ಅಥವಾ ಉಲ್ಲೇಖಿಸಬೇಕೆಂದು ಅಪ್ಪಟ ಭಾರತೀಯರಾದ ನಾವುಗಳು ಈ ಪತ್ರದ ಮೂಲಕ ವಿನಂತಿಸುತ್ತೇವೆ. ಜೈ ಭಾರತ್.

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

दिनांक: ०७ फरवरी २०२६

आदरणीय राज्यपाल,
श्री थावरचंद जी गहलोत,
राज भवन, भवन रोड, बेंगलुरू,
कर्नाटक, भारत-५६०००१

हिंदी अनुवाद

विषय: आपके कार्यालय से भेजा गया पत्र email के द्वारा प्राप्त हुआ।(संलग्न)
संदर्भ: कर्नाटक विधानसभा में INDIA की जगह BHARAT का उल्लेख किया जाए,ऐसी विनंती।

जय भारत!
भारत का एक राज्य कर्नाटक विधानसभा में INDIA नाम की जगह BHARAT नाम का उपयोग किया जाए ऐसी विनंती, हमने ९ अक्टूबर २०२५ को email के द्वारा की थी, जिसका उत्तर हमें email के द्वारा प्राप्त हुआ है, इसके लिए धन्यवाद!
आपके कार्यालय से मिले पत्रानुसार हमने आपको लिखा था कि भारत सरकार ने GOVERNMENT OF INDIA की जगह GOVERNMENT OF BHARAT केवल लिखना शुरू किया है, यह संवैधानिक नहीं, मात्र इच्छाशक्ति है, क्योंकि वर्तमान में भारतीय संविधान में INDIA और BHARAT दोनों का उल्लेख किया गया है, हर कोई अपनी इच्छानुसार अपने देश का नाम INDIA या BHARAT नाम का उपयोग कर सकता है, हम भारतीयों की इच्छा है कि भारत की केंद्र सरकार ने जिस प्रकार INDIA की जगह BHARAT लिखना शुरू कर दिया है, उसी प्रकार कर्नाटक सरकार भी अपने विधानसभा में INDIA की जगह BHARAT लिखना शुरू कर सकती है, जिसके लिए भारत की केंद्र सरकार से आदेश की जरूरत भी नहीं है, यह कर्नाटक सरकार पर निर्भर करता है कि हम कर्नाटक के बाद BHARAT लिखें या INDIA?
माननीय थावरचंद जी साहब! हम सभी 'भारत माता की जय' बोलते हैं, हजारों सालों से हमारे देश का नाम 'भारत' ही रहा है, हम सब जानते भी हैं कि नाम का अनुवाद कभी नहीं होता, इसलिए हम भारतीयों की इच्छा है कि कर्नाटक विधानसभा में जहां पर भी INDIA नाम का उल्लेख किया जा रहा है वहां पर BHARAT नाम का उल्लेख किया जाए, ऐसी हम भारतीयों की विनंती!
जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक	राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता	अनुप जलोटा, मुंबई	दिलिप सेन, मुंबई
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300	मो. 9821069089	मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	पूर्वांचल उपसभापति	उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री	उत्तरांचल उप सभापति	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता	सुशीला पुगलिया, कोलकाता	कांता गगरानी, आगरा	रवि जैन, मुंबई	पूरण डावर, आगरा	अरूण मूंधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका	किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 9874272916	मो. 8617203712	मो. 9837888088	मो. 8108843571	मो. 9837065440	मो. 01(919)610-7106	मो. 044(770)3827595

प्रकल्प प्रमुख

राष्ट्र सेविका	प्रसिद्ध उद्योगपति	पूर्व अध्यक्ष NICS, Bharat	मिसेस भारत युनिवर्स	मिसेस भारत युनिवर्स	प्रसिद्ध उद्योगपति व ब्लॉगर	प्रसिद्ध उद्योगपति
किरण लड्ढा, दिल्ली	प्रकाश बियानी, दिल्ली	ममता बिन्नानी, कोलकाता	रूपल मोहता, खामगांव	सिद्धि जोहरी, जोधपुर	श्रद्धा गट्टानी, उदयपुर	संगीता बियानी, भुसावल
मो. 9871605944	मो. 7895815961	मो. 9831099551	मो. 8989919898	मो. 7023043164	मो. 9314664412	मो. 9822536111

सुरेश मुंदड़ा, संबलपुर	नंदकिशोर माहेश्वरी, ढेंकनाल	घनश्याम पेड़ीवाल, भुवनेश्वर	सुशील राठी, बालासोर	सुनील कोठारी, कटक	दिनेश करनानी, बालासोर
मो. 9437061417	मो. 9437074044	मो. 9437086896	मो. 9437559297	मो. 9338104702	मो. 9937212483

और विश्व में फैले भारतीय...

आव्हानः 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

राष्ट्रीय कार्यालयः बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-4015 8094, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com, वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆ १५/१, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट, १ तल्ला, माहेश्वरी बालिका स्कूल के सामने, आलू पोस्ता के पास, बड़ाबाजार, कोलकाता, प. बंगाल, भारत- 700007 फोन : 033-71481571

◆ उड़ीसा कार्यालय ◆ सुरेश मुंदडा नौपाडा, पो. खेतराजपुर, जिला-संबलपुर, उड़ीसा, भारत- 768003 मो. 9437061417

◆ यूएसए ◆ 5501 रीजेंसी ड्राइव, शुगर लैंड, मेट्रो ह्यूस्टन, TX, यूएसए- 77479 फोन: +1-919-610-7106 (USA) ईमेल: mundra.arun@gmail.com

◆ यूनाइटेड किंगडम ◆ 76 रोज़नेथ एवेन्यू, लीसेस्टर, LE4 7GT, यूके फोन: + 44 7703827595 ईमेल: kishorjain@hotmail.co.uk

---

भारत के प्रधानमंत्री व केंद्रीय गृह मंत्रालय के साथ, सांसदों को भेजे गये पत्र की प्रति प्रस्तुत

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101
12A Reg No. AAPCM0514R25MB01 / 80G Reg No. AAPCM0514R25MB02 / CSR Reg No. CSR00101842

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

०९ फरवरी २०२६

हम भारतीयों के लाडले पंतप्रधान
श्री नरेंद्र मोदी जी,
साउथ ब्लॉक, रायसीना हिल
नयी दिल्ली - ११००११

विषयः भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं,
'एक राष्ट्र एक नाम 'भारत'
संदर्भः भारत का ही एक राज्य कर्नाटक के राज्यपाल कार्यालय से प्राप्त पत्र पर कार्यवाही हेतु निवेदन (संलग्न)

जय भारत!
हम भारतीयों के प्यारे व लाडले पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी दीर्घायु रहे, आपके पुनीत व दृढ़ निश्चयी कार्यों से विश्व में हम १४० करोड़ भारतीयों का भारत गौरवान्वित हो रहा है जिसके लिए आप, हम भारतीयों के दिलों में आदरणीय बने हैं साथ ही हम भारतीय आपको धन्यवाद भी देते हैं।
निवेदन यह है कि गत दिनों हमें भारत का ही एक 'कर्नाटक' राज्य के राज्यपाल कार्यालय से पत्र (संलग्न) प्राप्त हुआ कि केंद्र सरकार से हमें निर्देश नहीं दिया गया है कि हम राष्ट्र का नाम केवल भारत का ही उपयोग करें, भारतीय संविधान के अनुसार INDIA THAT IS BHARAT यानी दोनों नाम लिखे हुए कारण से, हम दोनों नाम उपयोग कर सकते हैं।
माननीय प्रधानमंत्री जी! आपने अपने यशस्वी भाषण में कई बार कहा है कि गुलामी के प्रतीक नामों व निशानों को धीरे-धीरे संवैधानिक रूप से विलुप्त किया जाएगा और आपने GOVERNMENT OF INDIA की जगह GOVERNMENT OF BHARAT लिखना भी शुरू कर दिया है और आपने अपनी कथनी पर भी मोहर लगा दी है।
हम भारतीय आपसे विनम्र निवेदन करते हैं कि 'भारत' का हर एक राज्य,जहां पर भी अपने राष्ट्र का नाम INDIA उपयोग कर रहा है वहां BHARAT नाम का ही उपयोग करे, क्योंकि हम सभी भारतीय व आप भी 'भारत माता की जय' ही बोलते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी कर्नाटक राज्य हम भारतीयों का है, हर कर्नाटक निवासी पहले भारतीय है, फिर कन्नड़, कर्नाटक की कन्नड़ भाषा भारतीय संस्कृति की धरोहर है और कर्नाटक निवासी भी चाहते हैं कि कर्नाटक में राष्ट्र के नाम का उपयोग केवल BHARAT नाम के साथ ही किया जाए।
हम आपसे विनम्र विनंती करते हैं कि हमारे निवेदन पर आपका ध्यान जरूर जाएगा और आपके द्वारा जरूर से जरूर कार्यवाही भी की जाएगी।
जय भारत!

निवेदक

राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, मुंबई मो. 9322307908 | राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, कोलकाता मो. 8910628944 | राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा मो. 9414183919 | राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, कोलकाता मो. 9830224300 | पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक अनुप जलोटा, मुंबई मो. 9821069089 | राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक दिलिप सेन, मुंबई मो. 93228 66476

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री वर्षा मूंधड़ा, कोलकाता मो. 9874272916 | पूर्वांचल उपसभापति सुशीला पुगलिया, कोलकाता मो. 8617203712 | उपाध्यक्ष कांता गगरानी, आगरा मो. 9837888088 | राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, मुंबई मो. 8108843571 | उत्तरांचल उप सभापति पूरण डावर, आगरा मो. 9837065440 | अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरूण मूंधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका मो. 01(919)610-7106 | अंतर्राष्ट्रीय संयोजक किशोर जैन, लंदन, यूके मो. 044(770)3827595

प्रकल्प प्रमुख

राष्ट्र सेविका किरण लड्ढा, दिल्ली मो. 9871605944 | प्रसिद्ध उद्योगपति प्रकाश बियानी, दिल्ली मो. 7895815961 | पूर्व अध्यक्ष NICS, Bharat ममता बिन्नानी, कोलकाता मो. 9831099551 | मिसेस भारत युनिवर्स रूपल मोहता, खामगांव मो. 8989919898 | मिसेस भारत युनिवर्स सिद्धि जोहरी, जोधपुर मो. 7023043164 | प्रसिद्ध उद्योगपति व ब्लॉगर श्रद्धा गट्टानी, उदयपुर मो. 9314664412 | प्रसिद्ध उद्योगपति संगीता बियानी, भुसावल मो. 9822536111

सुरेश मुंदड़ा, संबलपुर मो. 9437061411 | नंदकिशोर माहेश्वरी, ढेंकनाल मो. 9437074044 | घनश्याम पेड़ीवाल, भुवनेश्वर मो. 9437086896 | सुशील राठी, बालासोर मो. 9437559297 | सुनील कोठारी, कटक मो. 9338104702 | दिनेश करनानी, बालासोर मो. 9937212483

और विश्व में फैले भारतीय...

आव्हानः 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

राष्ट्रीय कार्यालयः बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28509999, ईमेल : mainbharathunfoundation@gmail.com, वेबसाइट : www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆ १५/१, शोभाराम बैशाख स्ट्रीट, १ तल्ला, माहेश्वरी बालिका स्कूल के सामने, आलू पोस्ता के पास, बड़ाबाजार, कोलकाता, प. बंगाल, भारत- 700007 फोन : 033-71481571

◆ उड़ीसा कार्यालय ◆ सुरेश मुंदड़ा नौपाडा, पो. खेतराजपुर, जिला-संबलपुर, उड़ीसा भारत- 768003 मो. 9437061411

◆ न्यू जर्सी ◆ 88 न्यूपोर्ट पार्कवे, अपार्टमेंट 3115, जर्सी सिटी, न्यू जर्सी 07310 ईमेल: Nihal.b.jain@gmail.com jain.nihal98@gmail.com

◆ यूएसए ◆ 5501 रीजेंसी ड्राइव, शुगर लैंड, मेट्रो ह्यूस्टन, TX, यूएसए- 77479 फोन: +1-919-610-7106 (USA) ईमेल: mundra.arun@gmail.com

◆ यूनाइटेड किंगडम ◆ 76 रोज़नेथ एवेन्यू, लीसेस्टर, LE4 7GT, यूके फोन: + 44 7703827595 ईमेल: kishorjain@hotmail.co.uk

कवर पृष्ठ २ का शेषांस......

भगवान महावीर फाउंडेशन - २९वें भगवान महावीर पुरस्कारों की घोषणा

भगवान महावीर फाउंडेशन ने २९वें महावीर पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा की है। पुरस्कार विजेता इस प्रकार रहेंगे:

➪सरहद, महाराष्ट्र - अहिंसा एवं शाकाहार

➪CORD, हिमाचल प्रदेश - शिक्षा

➪श्री शंकरा कैंसर फाउंडेशन, कर्नाटक - चिकित्सा

➪श्रीमती संगखुमी बुआलछुआक, मिज़ोरम - समुदाय एवं सामाजिक सेवा

निर्माण, ओडिशा - समुदाय एवं सामाजिक सेवा करने वाले को! बता दें कि

महावीर पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रदान किए जाते, प्रत्येक पुरस्कार में १० लाख (दस लाख) की नकद राशि, एक स्मृति-चिह्न और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

समाज के प्रति निःस्वार्थ सेवा करने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को निरंतर ३० वर्षों से सम्मानित किए जाने के उपलक्ष्य में, फाउंडेशन ने इस वर्ष पाँच पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया है। वर्ष २०२६ के पुरस्कार विजेताओं के चयन के साथ, महावीर पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या बढ़कर १०१ हो गई है, जो २६ राज्यों एवं २ केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करती है। पुरस्कारों का चयन बेंगलुरु में आयोजित बैठक में भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एम. एन. वेंकटचलैया की अध्यक्षता में गठित एक प्रतिष्ठित जूरी द्वारा किया गया।

➪ सरहद पिछले चार दशकों से संवाद, शिक्षा, संस्कृति और जन-सम्पर्क के माध्यम से भारत के संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति स्थापना और राष्ट्रीय एकता के लिए कार्य कर रहा है।

➪ कॉम्प्रिहेन्सिव इंटीग्रेटेड रूरल डेवलपमेंट शिक्षा आधारित समावेशन और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से विशेष रूप से दिव्यांगजनों और महिलाओं सहित वंचित समुदायों को सशक्त बनाता है।

➪ श्री शंकरा कैंसर फाउंडेशन बेंगलुरु और भुवनेश्वर स्थित अपने अस्पतालों के माध्यम से किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली कैंसर चिकित्सा प्रदान करता है, जिसमें रोकथाम, निःशुल्क जांच, रियायती उपचार और समग्र रोगी देखभाल पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

➪ श्रीमती संगखुमी बुआलछुआक ने विधायी सुधारों, जागरूकता अभियानों और स्वास्थ्य पहलों के माध्यम से मिज़ोरम में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है।

➪ निर्माण ओडिशा के आदिवासी और वनवासी समुदायों के साथ मिलकर आजीविका, खाद्य सुरक्षा और महिलाओं के नेतृत्व को सुदृढ़ करने हेतु कृषि-पर्यावरणीय खेती और सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से कार्य करता है। इन पुरस्कारों का वितरण शीघ्र ही राष्ट्रीय स्तर के विशिष्ट अतिथि द्वारा किया जाएगा, अधिक जानकारी के लिए कृपया www.bmfawards.org पर जाएँ।

एन. सुगलचंद जैन

संस्थापक ट्रस्टी – भगवान महावीर फाउंडेशन

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैन धर्म के आध्यात्मिक इतिहास में ऐतिहासिक उपलब्धि

मुंबईः श्री साधुमार्गी जैन संघ मुंबई, समता महिला मंडल, समता युवा मंडल एवं समता बहू मंडल के संयुक्त संयोजन एवं श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के मार्गदर्शन में 'वीर के वीर-राम के राम' कार्यक्रम के तहत संयम शतम् सफर का आयोजन किया गया, कांदिवली पूर्व के ठाकुर कॉम्प्लेक्स स्थित तेरापंथ भवन सभागृह में दो साल में १०८ दीक्षाएं पूरा होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में जैन साधु-संतों का आशीर्वाद लिया गया।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने दो सालों में १०८ दीक्षाएं पूरी करके बड़ा आध्यात्मिक संकल्प पूरा किया है, यह आह्वान अक्टूबर २०२३ में आचार्य श्री रामलाल जी महाराज साहेब ने किया था, उन्होंने जैन समुदाय और साधु-संतों से मिलकर दो साल के अंदर १०० से ज्यादा दीक्षा दिलाने का काम किया, साधुमार्गी जैन परंपरा के संतों और साध्वियों ने पूरी लगन से इस मिशन को सम्पूर्ण किया।

दिसंबर २०२५ तक संकल्प न सिर्फ पूरा हुआ, बल्कि उससे ज्यादा हासिल किया गया, जिसमें १०८ दीक्षाएं सफलतापूर्वक पूरी हुई, स्थानकवासी जैन परंपरा में यह पहली बार हुआ कि इतनी बड़ी संख्या में दीक्षाओं की घोषणा की गई और तय समय सीमा के अंदर पूरा किया गया।

आध्यात्मिक जागरण भी इस अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेंद्र गांधी, जावद श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सुमित बम्ब ने 'जिनागम' को बताया कि आचार्य श्री रामलाल महाराज जी के नेतृत्व में यह उपलब्धि एक मील का पत्थर है, साथ ही एक आध्यात्मिक जागरण भी है। आचार्य श्री रामलाल जी महाराज जी के मार्गदर्शन में साधु-संतों, साध्वियों और जैन समुदाय के समर्पित लोगों को सम्मानित किया गया।

२७ हजार से अधिक विद्यार्थियों ने दी धार्मिक परीक्षा श्री जैन धार्मिक शिक्षण संघ की राष्ट्रीय पहल

मुंबईः श्री जैन धार्मिक शिक्षण संघ की वार्षिक धार्मिक परीक्षा में मुंबई की जैन पाठशालाओं से २७ हजार से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए, पहली बार यह परीक्षा पूरे भारत में १०० से अधिक केंद्रों पर एक ही दिन और एक ही समय पर आयोजित की गई, इसका शुभारंभ संघ के उपाध्यक्ष संजयभाई जीवनलाल शाह, महिला मंडल की उपाध्यक्ष अल्पाबेन संजयभाई शाह, कोषाध्यक्ष ट्रस्टी अशोक नरसिंह चरला तथा जवाहरलाल मोतीलाल शाह ने दीप प्रज्जवलित कर किया। शकुंतला स्कूल में आयोजित परीक्षा के दौरान संघ के पदाधिकारियों ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन किया।

संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि 'पाठशाला' ही जैन शासन की आत्मा है। 'पाठशालाओं' में संस्कारित बच्चे आगे चलकर पंडित, समर्पित श्रावक श्राविकाएं, ट्रस्टी, स्वयंसेवक और जैन मूल्यों के रक्षक बनते हैं, जिससे जैन शासन सुदृढ़ होता है। संघ ने जैन डिजिटल पाठशाला भी शुरू की है।'

विदित हो कि संघ के मार्गदर्शन में मुंबई में ६५५ से अधिक पाठशालाएं संचालित हो रही हैं, जिनमें १,४०० से अधिक शिक्षक नियमित रूप से ७५ हजार से अधिक बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हैं।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सोशल मीडिया का उपयोग समाज परिवर्तन के लिए करें युगलमुनी श्री अमोघकीर्तिजी महाराज

'णमोकार तीर्थ' देशभर के ४७ प्रभावशाली व्यक्तित्वों का हुआ सम्मान

औरंगाबाद /चादवड णमोकार तीर्थ: 'आज का युवा एक ऊर्जा है, इस ऊर्जा का उपयोग विध्वंसात्मक कार्यों के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण के लिए होना चाहिए। वर्तमान में सोशल मीडिया के माध्यम से घर-घर में विकृतियां पहुँच रही हैं, ऐसे में युवाओं को एकजुट होकर देश, धर्म और परिवार के प्रति प्रेम बढ़ाने वाले संस्कार बढाने चाहिए, ऐसा ओजस्वी आह्वान युगलमुनी श्री अमोघकीर्तिजी महाराज ने किया।

राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में 'णमोकार तीर्थ' में ग्लोबल महासंघ के अध्यक्ष पारस लोहाडे की संकल्पना से आयोजित 'सोशल मीडिया युवक-युवती सम्मेलन' में वे मार्गदर्शन कर रहे थे, इस कार्यक्रम का आयोजन णमोकार ट्रस्ट कमेटी द्वारा किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रीतम पळसदेवगावकर ने की।

सोशल मीडिया से संस्कारों की बुआई:

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाराज श्री ने स्पष्ट किया कि युवा व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और यूट्यूब के माध्यम से केवल 'रील्स' न बनाएं, बल्कि इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि एक बेहतर समाज का निर्माण कैसे हो सकता है, उन्होंने युवाओं से माता-पिता के प्रति स्नेह और धर्म के प्रति जिम्मेदारी बढ़ाने वाले वीडियो बनाकर समाज में सकारात्मक क्रांति लाने का प्रतिपादन किया।

सर्वप्रथम बेडबाजा के साथ नांदगाव मंदिर जैन पाठशाला के बच्चों द्वारा समूह नृत्य करते हुए रॅली निकाल कर आचार्य श्री का भव्य स्वागत किया गया।

दिग्गजों की उपस्थिति और सत्कार:

सम्मेलन में राजस्थान, दिल्ली, गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल सहित देशभर से आए ४७ सोशल मीडिया प्रभावशाली व्यक्तियों और दानवीर प्रीतम पळसदेवगावकर का स्मृति चिन्ह व सम्मान पत्र देकर गौरव किया गया, इसी अवसर पर प्रसिद्ध संगीतकार रूपेश जैन की मधुर आवाज में रचित 'आमंत्रणम' गीत का एवम जिनेंद्र जैन रचित 'पंचकल्याणक णमोकार तीर्थ का' लोकार्पण भी संपन्न हुआ।

मार्गदर्शन और गरिमामयी कार्यक्रम:

'बदलते समय में युवाओं की भूमिका और धर्म के प्रति उत्तरदायित्व' विषय पर राष्ट्रसंत आचार्य श्री देवनंदीजी महाराज और युगलमुनी श्री अमोघकीर्तिजी महाराज ने उपस्थित जनसमूह का मार्गदर्शन किया, कार्यक्रम का शुभारंभ विधानकर्ता ब्र. अक्षय भैय्या जैन के मंगलाचरण से हुआ।

दीप प्रज्ज्वलन एवं उपस्थिति: कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष पेंढारी, ट्रस्ट के अध्यक्ष नीलम अजमेरा, बाल ब्रह्मचारी वैशाली दीदी, उपाध्यक्ष महावीर गंगवाल, नरेंद्र कासलीवाल, प्रदीप ठोळे, विजय कासलीवाल, भूषण कासलीवाल, चंद्रशेखर कासलीवाल, अनुराग जैन, अलकेश काला और प्रचार-प्रसार संयोजक विनोद पाटणी के कर-कमलों द्वारा किया गया, इस अवसर पर युगलमुनी श्री पावनकीर्तिजी महाराज सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, कार्यक्रम की प्रस्तावना और सूत्र संचालन पारस लोहाड़े ने किया, आभार प्रदर्शन आनंद काला ने माना।

-एम.सी.जैन,पत्रकार
९४२३१५०११६

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th February 2026 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598